Biyani's Think Tank

***Concept based notes***

# Environment

*B.S.T.C*

Vinod Jain
Dr. Kusum Lata
Department of Education
Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

GURUKPO
Get Instant Access to Your Study Related Queries...

For more detail: - http://www.gurukpo.com

*Published by :*
**Think Tanks**
**Biyani Group of Colleges**

*Concept & Copyright :*
**©Biyani Shikshan Samiti**
Sector-3, Vidhyadhar Nagar,
Jaipur-302 023 (Rajasthan)
Ph : 0141-2338371, 2338591-95 • Fax : 0141-2338007
E-mail : acad@biyanicolleges.org
Website :www.gurukpo.com; www.biyanicolleges.org

**First Edition : 2009**

While every effort is taken to avoid errors or omissions in this Publication, any mistake or omission that may have crept in is not intentional. It may be taken note of that neither the publisher nor the author will be responsible for any damage or loss of any kind arising to anyone in any manner on account of such errors and omissions.

*Leaser Type Setted by :*
**Biyani College Printing Department**

For more detail: - http://www.gurukpo.com

# Preface

I am glad to present this book, especially designed to serve the needs of the students. The book has been written keeping in mind the general weakness in understanding the fundamental concepts of the topics. The book is self-explanatory and adopts the "Teach Yourself" style. It is based on question-answer pattern. The language of book is quite easy and understandable based on scientific approach.

Any further improvement in the contents of the book by making corrections, omission and inclusion is keen to be achieved based on suggestions from the readers for which the author shall be obliged.

I acknowledge special thanks to Mr. Rajeev Biyani, *Chairman* & Dr. Sanjay Biyani, *Director* (*Acad.*) Biyani Group of Colleges, who are the backbones and main concept provider and also have been constant source of motivation throughout this Endeavour. They played an active role in coordinating the various stages of this Endeavour and spearheaded the publishing work.

I look forward to receiving valuable suggestions from professors of various educational institutions, other faculty members and students for improvement of the quality of the book. The reader may feel free to send in their comments and suggestions to the under mentioned address.

**Author**

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

**प्रश्न 1. पर्यावरण अध्ययन क्या है? परिभाषित कीजिए।**

**उत्तर–** 'पर्यावरण अध्ययन' पर्यावरण को समझने तथा उसके विषय में जागरूकता उत्पन्न करने की एक प्रक्रिया में ही पर्यावरण तथा मनुष्य और उसकी क्रियाओं के मध्य सम्बन्धों को समझने की शिक्षा है। वायु, जल, पृथ्वी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मानव आदि से मिलकर ही पर्यावरण की रचना होती है।

ब्रह्माण्ड के समस्त जीवधारियों की समुचित वृद्धि, विकास, रख-रखाव एवं सुव्यवस्थित जीवन क्रम को को चलाने के लिये संतुलित पर्यावरण की आवश्यकता पड़ती है, परन्तु मनुष्य संतुलित वातावरण को तभी बनाये रख सकता है, जब उसे इस बात का शिक्षण या प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।

**परिभाषा**–''पर्यावरण अध्ययन के दायित्वों को जानने तक विचारों को स्पष्ट करने की वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य अपनी संस्कृति और जैव भौतिक परिवेश के मध्य स्वयं की सम्बन्धता एवं समझने के लिये आवश्यक कौशल एवं अभिवृत्ति का विकास कर सकें।''

पर्यावरण अध्ययन पर्यावरण की गुणवत्ता से सम्बन्धित प्रकरणों के लिये व्यावहारिक संहिता का निर्माण करने तथा निर्णय लेने की आदत को भी व्यवस्थित करता है।

**फिनिश नेशनल कमीशन**–''पर्यावरणीय शिक्षा पर्यावरणीय संरक्षण के लक्ष्यों को लागू करने का एक ढंग है। यह विज्ञान की एक पृथक् शाखा या कोई पृथक् अध्ययन विषय नहीं है। इनको जीवन पर्यन्त एकीकृत शिक्षा के सिद्धान्त के रूप में लागू किया जाना चाहिए।''

"Environmental education is the way of implementing the goal of environmental proetion. Environmental education in not a saparate branch of science of subject of study is should be carried out according the the principal of life long untegrated education." **—Finish National Commission**

**प्रश्न 2. पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा क्या है?**

**उत्तर–** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज के पर्यावरण में ही उसका जन्म होता है और उसी में मृत्यु ऐसी दशा में उसके लिये आवश्यक है कि वह समाज में अपने को ठीक प्रकार से व्यवस्थित कर लेता है तो यह उसकी सफलता है, परन्तु सामाजिक पर्यावरण में अपने को व्यवस्थित करने की योग्यता प्रत्येक व्यक्ति में नहीं होती, इस योग्यता को उत्पन्न करने में 'पर्यावरणीय अध्ययन' एक विषय के रूप में विशेष रूप से सहायक होता है।

मानव द्वारा अर्जित ज्ञान का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया जाता है, परन्तु सुविधि की दृष्टि से मानव ज्ञान को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(1) प्राकृतिक विज्ञान (Natural Science)

(2) सामाजिक पर्यावरणीय विज्ञान (Social Environmental Science)

**(1) प्राकृतिक विज्ञान (Natural Science)**–प्राकृतिक विज्ञानों के माध्यम से सृष्टि की दृष्टिगत प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। ये विज्ञान दो भागों में विभाजित किये जा सकते हैं–

भौतिक विज्ञान तथा जीव विज्ञान। भौतिक विज्ञान में भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र तथा भूगोल आते हैं तथा जीव विज्ञान में जन्तु विज्ञान, प्राणिशास्त्र, वनस्पति विज्ञान आते हैं।

**( 2 ) सामाजिक पर्यावरणीय विज्ञान (Social Environmental Science)**–पर्यावरणीय विज्ञान में वे विषय आते हैं, जिनका सम्बन्ध मानव समाज के उद्‌गम और विकास से है। इनके माध्यम से मानव के जीवन और उसके विभिन्न सामाजिक क्रिया–कलापों का विस्तार से अध्ययन किया जाता है। सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत अनेक विषयों का अध्ययन किया जाता है। इतिहास, नागरिकशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, आचारशास्त्र आदि।

पर्यावरणीय विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान में पर्याप्त अन्तर है। यदि भौतिक पदार्थों से सम्बन्धित है तो दूसरा मानव जीवन से सम्बन्धित है। यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो हमें लगता है कि दोनों का ही मानव जीवन के कल्याण में विशेष योगदान रहा है। भौतिकशास्त्र ने मपि, भापशक्ति आदि के आविष्कार किये हैं तो रसायन ने विभिन्न रोगों के उन्मूलन में सहायता की है। इसी प्रकार पर्यावरणीय विज्ञान के विषय मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं और सामाजिक पद्धतियों को व्यवस्थित करने में सहायक होते हैं।

**प्रश्न 3. पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति की विवेचना कीजिए।**

**उत्तर–** पर्यावरणीय अध्ययन की प्रकृति की विवेचना हेतु मुदालियर कमीशन ने लिखा है–''इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र आदि को पूर्ण इकाई के रूप में देखना चाहिए। सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत परिवार, समुदाय, राज्य तथा राष्ट्र के पर्यावरणों को स्थान प्राप्त हो, जिससे छात्र उन सामाजिक शक्तियों एवं आन्दोलनों के विषय में जान सके, जिसमें वह रहता है।''

**जेम्स हेमिंग** (James Hemming)–पर्यावरणीय अध्ययन को प्रजातन्त्र को सफल को सफल बनाने में सहयोग देने वाला विषय मानता है। इनके अनुसार–''पर्यावरण अध्ययन प्रजातान्त्रिक रूप से सहयोगी जीवन व्यतीत करने तथा उसके उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति से सम्बन्धित समस्याओं के हल का सत्य प्रत्य है।''

**ई. बी. वेस्ले** (E. B. Wesley) के शब्दों में–''पर्यावरीय अध्ययन वह विषय है जो मानव समाज के संगठन तथा सामाजिक समूह के सदस्य के रूप में मनुष्य के विकास से सम्बन्घित है।''

**अमेरिकन राष्ट्रीय शैक्षिक संस्था आयोग के मतानुसार**–''पर्यावरणीय अध्ययन वह विषय है जो मानव समाज के संगठन तथा सामाजिक समूह के सदस्य के रूप में मनुष्य के विकास से सम्बन्धित है।''

पर्यावरणीय अध्ययन के सन्दर्भ में हम विधावती मलैया का यह कथन प्रस्तुत करते हैं–''पर्यावरणीय अध्ययन मानव तथा उसके सामाजिक एवं स्वाभाविक वातावरण की प्रक्रियाओं से सम्बन्ध रखता है। यह विषय मानव के आपसी सम्बन्धों से सम्बन्धित है, उइसके अध्ययन में जीवन–यापन की विधियाँ तथा सहयोग से कार्य करने, अपनी प्रमुख आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वातावरण का उपयोग करने, संस्कृति तथा उसके प्रभावशाली तत्त्वों से परिचय प्राप्त करने पर अधिक ध्यान दिया जाता है।''

**प्रश्न 4. पर्यावरण अध्ययन का क्षेत्र तथा पर्यावरण अध्ययन का वर्तमान युग में क्या महत्त्व है?**

**उत्तर–** ''पर्यावरणीय अध्ययन का कार्यक्रम सामाजिक विज्ञानों, जैसे–भूगोल, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, मानवशास्त्र तथा समाजशास्त्र हमारी लोकतंत्रीय विरासत का अध्ययन तथा सामाजिक समस्याओं और परिवर्तनों एवं शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधारों में निहित है।'' फिर भी आधुनिक विचारधाराएँ इसकी दिन–प्रतिदिन बढ़ती हुई सीमओं की ओर संकेत करती है। इसका क्षेत्र समाज तथा पड़ौस से प्रारम्भ होकर जिला, प्रादेशिक, राष्ट्रीय तथा विश्व–स्तर तक माना जाता है।

पर्यावरणीय अध्ययन व्यक्ति की सामाजिक सम्पूर्ण प्रक्रियाओं के विषय का क्षेत्र है। पर्यावरणीय अध्ययन के क्षेत्र को सुविधि की दृष्टि से निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. नागरिकता की शिक्षा
2. मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन
3. वर्तमान घटनाएँ
4. समाज सम्बन्धी अध्ययन
5. सामाजिक और भौतिक वातावरण के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन
6. ललित कलाओं और प्राकृतिक विज्ञानों का ज्ञान
7. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध
8. विश्व की प्रमुख समस्याओं का अध्ययन।

इस प्रकार पर्यावरणीय अध्ययन के क्षेत्र में पर्यावरण से सम्बन्ध इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं समाजशासत्र का अध्ययन विशेष उपयोगी रहता है। इन विषयों के अतिरिक्त भी कुछ विषयों का ज्ञान प्रसंगवश सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन के क्षेत्र में समाविष्ट हो सकता है। जैसे– वाणिज्य, नीतिशास्त्र, मानव जाति विज्ञान (Ethnology), नृवंशशास्त्र (Anthropology), राजनीतिशास्त्र आदि सामाजिक विज्ञान के विषय हैं। यद्यपि पर्यावरणीय अध्ययन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है, किन्तु यह क्षेत्र इस विषय के लिये विद्यालय के समय विभाग चक्र में उपलब्ध समय तथा पाठ्यक्रम में अन्य सामाजिक विज्ञानों की स्थिति पर निर्भर होगा।

**सामाजिक पर्यावरण अध्ययन का वर्तमान युग में महत्त्व**–शिक्षा को जीवन की सामाजिक तथरा सांस्कृतिक आवश्यकताओं से परे रखा जाता था। अन्य शब्दों में शिक्षा मूल रूप से जीविकोपार्जन के उद्देश्यों से प्रभावित थी। परिणामस्वरूप केवल भाषा, गणित तथा भौतिक विज्ञान को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता था। सामाजिक विषयों की उपेक्षा की जाती थी, क्योंकि उनका कोई व्यवसायिक महत्त्व नहीं था। आगे चलकर भूगोल, इतिहास तथा नागरिकशास्त्र को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाने लगा, परन्तु इन विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान देने का मूल उद्देश्य सांस्कृतिक था, सामाजिक नहीं।

प्राचीनकाल में व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध पर्याप्त सरल और स्पष्ट थे। इसीलिये सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता पर शिक्षाविदों का ध्यान ही नहीं गया। कुछ वर्षों में पर्यावरण अध्ययन एवं

GURUKPO Get Instant Access to your Study Related Queries...

पर्यावरण संरक्षण की चर्चा सभी जगह सुनायी पड़ रही है। समस्त विश्व में सभी देश किसी-न-किसी रूप में पर्यावरण को लेकर चिन्तित है। प्रकृति का स्वरूप बिगड़ने के कारण मानव को स्वयं अपने अस्तित्व की सुरक्षा का संकट अनुभव होने लगा है। इसीलिये प्राकृतिक असन्तुलन के कारण प्रदूषण का खतरा बढ़ने लगा है। मानव को धीरे-धीरे यह अनुभव होने लगा है कि जीवन के लिये सुख सुविधाएँ एकत्रित करने के साथ-साथ अपने पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखना एवं पर्यावरण की सुरक्षा करना नितान्त अनिवार्य है।

पर्यावरण अध्ययन के शैक्षिक महत्त्व को पर्यावरण के सञ्ज्ञन्ध में जागरूकता एवं शिक्षित करने के साधन के रूप में अहम् समझाया गया। पर्यावरण अध्ययन को भविष्य में आने वाली पर्यावरणीय समस्याओं को समझने, उनको रोकने एवं सकारात्मक भूमिका अदा करने के रूप में उपयोगी समझा जा रहा है।

**प्रश्न 5. भारत में पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण के कौन-कौन से उद्देश्य हैं? वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** किसी भी विषय के अध्ययन को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने के लिये उसके उद्देश्य की जानकारी आवश्यक है। उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षण कार्य अपूर्ण और प्रभावहीन हो जाता है।

अन्य शब्दों में-''उद्देश्यों की जानकारी के बिना शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से संचालित नहीं किया जा सकता।'' शिक्षण वास्तव में एक सप्रयोजन क्रिया है, अत: उसके उद्देश्यहीन होने की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

पर्यावरणीय अध्ययन के उद्देश्य निज़लिखित हैं-

(1) **उत्तम नागरिकता विकास**-नागरिकों की उत्पत्ति सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन से ही सज़्भव है। यह प्रमुख उद्देश्य माना गया है।

(2) **सामाजिक भावनाओं का विकास**-किसी भी देश की समृद्धि वहाँ के जन समुदाय पर आधारित होती है, क्योंकि पर्यावरण अध्ययन के अध्ययन से सामाजिक भावनाओं का विकास होता है।

(3) **समाज द्वारा निर्धारित मूल्यों की जानकारी देना**-पर्यावरण अध्ययन का उद्देश्य समाज द्वारा निर्धारित मूल्यों की जानकारी भी देना होता है। क्योंकि समाज द्वारा निर्धारित मूल्यों रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा संस्कृति के नियमों का ज्ञान कराना भी आवश्यक है।

(4) **छात्रों को सामाजिक प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण का ज्ञान कराना**-पर्यावरणीय अध्ययन का उद्देश्य बालकों को उनके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक वातावरण के अतिरिक्त सांस्कृतिक वातावरण, जैसे-धर्म, कलाओं, रीति-रिवाज आदि की भी छात्रों को भी जानकारी कराना आवश्यक है।

(5) **विश्व बंधुत्व तथा अन्तर्राष्ट्रीयता की भावनाओं का विकास**-पर्यावरणीय अध्ययन का लक्ष्य व्यक्तियों में अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना है। किसी भी देश की उन्नति नहीं हो सकती जब तक कि किसी दूसरे देश के प्रति सद्भाना नहीं रखता हो।

Get Instant Access to Your Study Related Queries...

( 6 ) **जनतांत्रिक कुशलता का विकास करना**–जनतंत्र की सफलता के लिये नागरिकों में कुछ कुशलताओं तथा गुणों का होना आवश्यक है, जैसे–

(i) सामाजिक समस्याओं को समझने की क्षमता,

(ii) जनतांत्रिक मूल्यों का ज्ञान,

(iii) स्वतंत्रता और समानता का वास्तविक अर्थ समझना,

(iv) मताधिकार का उचित प्रयोग समझना,

(v) प्रजातांत्रिक आदर्शों में आस्था रखना

(vi) जीवन के नवीन आदर्शों, नवीन तथ्यों तथा नवीन विचारों के लिये ग्रहणशीता।

( 7 ) **बालकों में विभिन्न वृत्तियों तथा कलाओं का विकास**–जे. एफ. फोरेस्टर के शब्दों में, ''पर्यावरणीय अध्ययन का मुज्य लक्ष्य लक्ष्यात्मक सूचनाओं को संग्रहित करने की अपेक्षा मानदण्डों, वृत्तियों तथा, कौशलों का निर्माण करना है।''

( 8 ) **सामाजिक समस्याओं का ज्ञान तथा निराकरण**–पर्यावरणीय अध्ययन का मुज्य उद्देश्य समस्याओं की जानकारी तथा उनका निराकरण है।

**प्रश्न 6. उद्देश्यपूर्ण शिक्षण का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर**– किसी भी विषय के सफल शिक्षण के लिए उसके उद्देश्यों की जानकारी आवश्यक है। वास्तव में किसी भी कार्य को प्रारज़्भ करने से पूर्व उसके उद्देश्यों की जानकारी होना आवश्यक है। कार्य या शिक्षा के लाभदायक परिणामों की प्राप्ति तभी हो सकती है जबकि उसके उद्देश्य निश्चित हों, यदि हमें किसी कार्य के उद्देश्यों का ज्ञान नहीं होगा तो उस कार्य को करने में उत्साह भी नहीं होगा। शिक्षा के क्षेत्र में भी यही बात लागू होती है, किसी विषय के उद्देश्य निर्धारित हो जाने पर अध्यापक और छात्र दोनों ही ज्ञान के आदान–प्रदान की प्रक्रिया में जुट जाते हैं। अध्यापक की शिक्षण प्रक्रिया भी प्रभावशाली हो जाती है। उद्देश्यहीन शिक्षण व्यर्थ और अन्धकार में भटकाने वाला माना जा सकता है।

एस. के. अग्रवाल ने उद्देश्यपूर्ण शिक्षण का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है कि–

1. ''उद्देश्य रहित कार्य में किसी का मन नहीं लगता, उद्देश्यरहित शिक्षा फलदायी भी नहीं होती, वर्तमान भारतीय शिक्षा इस कारण दोषपूर्ण है कि उसका कोई भी निश्चित उद्देश्य नहीं है।''

2. इसी प्रकार सुबोध अग्रवाल ने भी एक स्थल पर कहा है–''प्रारज़्भ से ही एक निश्चित उद्देश्य बना लेने पर बालक इधर–उधर भटकने से बच जाते हैं और उनकी शक्ति का अपव्यय नहीं होता। वे दृढ़तापूर्वक उस उद्देश्य की प्राप्ति में जुट जाते हैं और इस एकाग्रता तथा लगन के फलस्वरूप जीवन में भी सफलता प्राप्त कर लेते हैं।''

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि उद्देश्यहीन शिक्षण वास्तव में दिशाहीन शिक्षण है।

For more detail: - http://www.gurukpo.com

**प्रश्न 7. उद्देश्यानुकूल अध्ययन अध्यापन संस्थितियों का आयोजन आप किस प्रकार करेंगे। समझाइये।**

**उत्तर–** उद्देश्यपूर्ण शिक्षण के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षण में संस्थितियों का आयोजन किया जाता है। इसके लिये उचित पर्यावरणीय व्यवस्था निम्नलिखित प्रकार से की जाती है–

1. सामाजिक प्रगति करने के लिये भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी दी जाती है।
2. व्यावसायिक क्रियाओं और सम्भावनाओं को सरलता से समझाया जाता है।
3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का ज्ञान कराया जाता है।
4. अच्छे नागरिक की भावना का विकास किया जाता है।
5. स्वदेश–प्रेम की भाना का प्रादुर्भाव किया जाता है।
6. सद्व्यवहार का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
7. सहयोग, साहस, सहनशीलता के लिये छात्रों को प्रशिक्षित किया जाता है।
8. आधारभूत कौशल का विकास किया जाता है।
9. वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण चिन्तन का विकास किया जाता है।
10. उस क्षमता का विकास किया जाता है, जिसके द्वारा छात्र प्रमुख ऐतिहासिक तथ्यों की तुलना, समीक्षा एवं समालोचना कर सके।
11. घटनाओं एवं संस्थाओं को समय, स्थान तथा उपयोगिता की दृष्टि से देखने के कारण विकास की सम्भावना का अवसर दिया जाता है।

इसलिये वातावरण की जानकारी छात्र को कराना बहुत आवश्यक है। इसमें प्राकृतिक वातावरण राजनीतिक वातावरण, सांस्कृतिक वातावरण तथा आर्थिक वातावरण की जानकारी सम्मिलित है। छात्रों को वनस्पति, खनिज, पर्वत, नदी, ऋतुएँ, पशु–पक्षी, वायुमण्डल, परिवार, गाँव, राज्य, कस्बा तथा निकट से छात्रों को कराना चाहिए। आर्थिक विकास की जानकारी देने हेतु उद्योग–धन्धे, कृषि, पशु–पालन तथा कारखानों का बोध कराना आवश्यक है।

**प्रश्न 8. उद्देश्यानुकूल मूल्यांकन प्रक्रिया पर अपने विचार प्रकट कीजिए।**

**उत्तर–** **मूल्यांकन का अर्थ**–मूल्यांकन छात्र के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोक्रियात्मक पक्ष के विकास का मापन करता है और उनकी उपयुक्तता की जांच करता है। किसी भी विषय के शिक्षण के बाद यह जानना आवश्यक है कि छात्रों ने इसे कहाँ तक ग्रहण किया? उसके व्यवहार में क्या परिवर्तन आये? तथा ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई? इस प्रकार छात्रों के व्यक्तित्व के विविध पक्षों का मापन ही मूल्यांकन है।

मूल्यांकन वर्तमान शिक्षा पद्धति में एक क्रमिक प्रक्रिया है, जो शिक्षा के उद्देश्य सीखने के अनुभव तथा मूल्यांकन के साधनों के मध्य निरन्तर चलती रहती है। उद्देश्य, अनुभव एवं मूल्यांकन निरन्तर

GURUKPO Get Instant Access To Your Study Related Queries...

एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तथा उच्च स्तर की उपलब्धि का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन, उद्देश्य एवं शिक्षण पद्धतियों के पारस्परिक सम्बन्ध को डॉ. ब्लूम ने त्रिकोणात्मक रूप में समझाया है।

**शिक्षण उद्देश्य**
(Objectives)

**पाठ्यक्रम एवं सीखने के अनुभव**
(Curriculum and Learning Experiences)

**मूल्यांकन के साधन**
(Tool ofEvaluation)

परिभाषाओं के आधार पर मूल्यांकन को अधिक स्पष्ट समझा जा सकता है–

**मुफात के अनुसार**–''मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और यह छात्रों की औपचारिक शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक है। यह व्यक्ति के विकास में अधिक रुचि रखता है। वह व्यक्ति के विकास को उसकी भावनाओं, विचारों तथा क्रियाओं से सम्बन्धित अपेक्षित व्यवहार-परिवर्तनों के रूप में करता है।''

**वेस्ले के अनुसार**–''मूल्यांकन एक समावेक्षित धारणा है, जो इच्छित परिणामों के गुण, महत्त्व तथा प्रभावशीलता का निर्णय करने के लिये समस्त प्रकार के प्रयासों तथा साधनों की ओर संकेत करता है। यह वस्तुगत प्रमाण तथा आत्मगत निरीक्षण का मिश्रण है। यह सम्पूर्ण तथा अन्तिम अनुमान है। यह नीतियों के रूप परिवर्तनों एवं भावी कार्यक्रम के लिए महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक पथ-प्रदर्शक है।''

**कोठारी आयोग** ने मूल्यांकन के बारे में कहा–''मूल्यांकन वह प्रमुख साधन है जिससे की समाज को यह विश्वास होगा कि विद्यालय को प्रदान किया गया कार्य संतोषजनक ढंग से पूरा किया जा रहा है और वे बालक जो वहाँ अध्ययन कर रहे हैं, समुचित प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तथा आशाजनक स्तर को प्राप्त कर रहे हैं।''

मूल्यांकन द्वारा समाज को यह पता चलता है कि इसके द्वारा स्थापित संस्थाएँ सामाजिक आवश्यकताओं और उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक कर रही हैं।

शिक्षकों, शिक्षण-पद्धतियों, पाठ्य-पुस्तकों आदि की उपयुक्त जांच करना।

**प्रश्न 9. ''अध्यापन उद्देश्य, अध्ययन-अध्यापन संस्थितियाँ एवं मूल्यांकन के साधन एक-दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर**– अध्यापन के उद्देश्य पर्यावरणीय अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में आधार माने जाते हैं तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन की संस्थितियाँ निर्मित की जाती हैं। इन संस्थितियों के बारे में यह ज्ञात किया जाता है कि संस्थितियों द्वारा कहाँ तक पर्यावरणीय अध्यापन की उपलब्धि हुई, इसकी मूल्यांकन द्वारा जानकारी की जाती है। संस्थितियाँ तथा मूल्यांकन एक-दूसरे के पूरक हैं तथा एक-

दूसरे पर निर्भर करते हैं। शिक्षण प्रक्रिया की सफलता हेतु संस्थितियाँ तथा शिक्षण के उद्देश्य बहुत आवश्यक होते हैं। शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले तीन अंग निम्नलिखित हैं–

(1) उद्देश्यों का निर्धारण,

(2) उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये अध्ययन-अध्यापन क्रियाओं का निर्धारण,

(3) मूल्यांकन की प्रविधियों का चयन एवं निर्माण।

**(1) उद्देश्यों का निर्धारण**–सबसे पहले शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। इसके पश्चात् विषयवस्तु से सम्बन्धित उस उद्देश्य का चयन करना पड़ता है, जिसका मूल्यांकन करना होता है। यह व्याख्या विशेषत: बालक के व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में की जाती है। इन परिवर्तनों को पाठ्य-वस्तु से घनिष्ठता के साथ जोड़ा जाता है।

**(2) उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये अध्ययन-अध्यापन क्रियाओं का निर्धारण**–इस चरण के अन्तर्गत अध्यापक यह प्रयत्न करता है कि कक्षा की सम्पूर्ण स्थिति इस प्रकार की हो, जिसमें छात्र स्व-अधिगम की क्रियाओं द्वारा अधिक-से-अधिक अनुभव प्राप्त कर सके, इसे दृष्टि में रखकर अध्यापक विषयगत शिक्षण-पद्धतियों, सहायक पद्धतियों, सहायक सामग्री, पाठ्य-पुस्तक, पाठ्यवस्तु तथा अन्य शैक्षिक उपकरणों की सहायता लेता है।

**(3) मूल्यांकन की प्रविधियों का चयन एवं निर्माण**–इस चरण के अन्तर्गत अध्यापक उन प्रविधियों का चयन करता है तो अपेक्षित व्यवहारों के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में साक्ष्य प्रदान करती है। यदि छात्रों के व्यवहार-परिवर्तनों की जानकारी लेने के लिये स्वनिर्मित परीक्षण उपलब्ध नहीं है तो उसे नयी प्रविधियाँ ढूँढ़कर प्रयोग में लानी चाहिए।

शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये ही अध्ययन-अध्यापन की उपयुक्त परिस्थितियाँ सुनिश्चित की जाती है अर्थात् उद्देश्यों का निर्धारण शिक्षण की सभी व्यवहारिक प्रक्रियाओं की पहचान तथा उद्देश्यों के अनुरूप पढ़ायी जाने वाली पाठ्य-वस्तु। वह पुन: इस पाठ्य-वस्तु के रूप का विश्लेषण करता है। इसके बाद शिक्षण शिक्षण की व्यूह रचना के सम्बन्ध में निर्णय करता है। अब वह तय करता है कि शिक्षण विधि के प्रयोग से ही शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है। साथ-साथ शिक्षक छात्रों की व्यूह रचना के सम्बन्ध में निर्णय करता है। अब वह यह तय करता है कि शिक्षण विधि के प्रयोग करने से शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है। साथ-साथ शिक्षक छात्रों के अनुरूप अपेक्षित व्यवहार से मूल्यांकन के लिये उपयुक्त परीक्षण प्रविधियों का चयन करता है। इससे छात्रों की उपलब्धि एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में भी निणय लिया जाता है।

**प्रश्न 10. सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन के प्रमुख सामान्य सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।**

**उत्तर**– पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं–

**(1) जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से सम्बन्ध का सिद्धान्त**–इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्य-विषय को बालकों के वास्तविक जीवन से सम्बन्धित करके पढ़ाया जाता है। इससे उसमें रोचकता आती है। इस विषय में एस. के. अग्रवाल का कथन यह है कि–

''वास्तविक जीवन से सज़्बन्ध स्थापित हो जाने पर विभिन्न विषयों का ज्ञान अधिक सुगमता तथा शीघ्रता से ग्रहण किया जा सकता है। जहाँ तक सज़्भव हो वास्तविक परिस्थितियों एवं जहाँ ऐसा न हो सके वहाँ उनके अनुरूप परिस्थितियों का आयोजन करके विद्यार्थियों को उनमें जीने काअवसर देना चाहिए।''

( 2 ) **शिक्षार्थियों की रुचि के सीधे उपयोग का सिद्धान्त**–बालक जिस पाठ में अधिक रुचि लेते हैं, वह उनकी समझ में शीघ्रता से आ जाता है। अत: अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह अपने पाठ को अधिक रोचक बनाने का प्रयास करें। पाठ में रुचि उत्पन्न करने के लिये निज़ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है–

* क्रियाशीता के सिद्धान्त को अपनाया जाए।

* बालक में जिज्ञासा जागृत की जाए।

* अध्यापन क्रिया को जीवन से सज़्बन्धित किया जाए।

( 3 ) **शिक्षार्थियों के प्रयत्नों को प्रोत्साहित करने का सिद्धान्त**–पर्यावरणीय अध्ययन का मूल उद्देश्य व्यक्ति को समाज में सफल जीवन जीने की कला सीखाना है, किन्तु यह व्यवहारिक जीवन जीने की यह कला उस परिस्थिति में अधिक सफलतापूर्वक सीखी जा सकती है। जहाँ व्यक्ति को स्वयं कार्य करने का अनुभव प्राप्त हो, इसे क्रियाशीलता पा करके सीखने का सिद्धान्त भी कहते हैं। बालक स्वभाव से क्रियाशील होता है। अत: अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह बालक को जो भी ज्ञान प्रदान करें, क्रियाशीलता के आधार पर करें।

( 4 ) **गतिविधियों एवं क्रियात्मक कार्यों पर बल का सिद्धान्त**–हमें किसी भी पाठ को पढ़ाने से पहले उसके उद्देश्य का ज्ञान अति आवश्यक है। उद्देश्य निश्चित हो जाने पर शिक्षण स्पष्ट, प्रभावशाली और रुचिपूर्ण हो जाता है। शिक्षक को यह पता रहता है कि उसे क्या प्राप्त करना है। छात्र निश्चित उद्देश्य को प्रापत करने का प्रयास करते हैं, जिससे उनमें क्रियाशीलता आती है। उद्देश्यविहीन शिक्षण नीरस और गतिहीन होता है। इसीलिये गतिविधियों एवं क्रियात्मक कार्यों पर बल दिया जाना अपेक्षित है।

( 5 ) **उपयोगी विषयवस्तु के चयन का सिद्धान्त**–व्यक्ति का सामाजिक जीवन माँ की गोद में प्रारज़्भ होता है, जो धीरे-धीरे विकसित होकर अपने परिवार, पस-पड़ोस, मौहल्ला विद्यालय, नगर, तहसील, जिला, राज्य एवं यहाँ तक कि सज़्पूर्ण विश्व को भी अपने में समाहित कर लेता है।

( 6 ) **शिक्षण के नियोजन का सिद्धान्त**–शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिये अध्यापक को अपनी पाठ्य-सामग्री को उचित प्रकार नियोजित करके छात्रों के सज़्मुख प्रस्तुत करनी चाहिए। इसके लिये पढ़ाने से पूर्व यह निश्चित कर लेना चाहिए कि क्या पढ़ाना है, किस विधि का प्रयोग करना है, किन तथ्यों पर अधिक बल देना है, विषय-वस्तु से सज़्बन्धित उपयुक्त सहायक सामग्री क्या-क्या होगी, तथा सज़्भावित समस्याओंको किस प्रकार हल करना है। ऐसा करने से छात्र सरलता एवं स्पष्टता से सीा सकते हैं।

For more detail: - http://www.gurukpo.com

**( 7 ) सहभागित्व एवं आनन्दानुभूति का सिद्धान्त** (Principal of self realization and participation)–इस सिद्धान्त के अनुसार बालकों को इस प्रकार की क्रियाओं को करने के अवसर प्रदान किये जाएँ जो कि रचनात्मक तथा मनोरंजक हो, जिससे छात्र अपनी सृजनात्मक प्रवृत्ति का प्रयोग कर सकेंगे, दूसरे क्रियाओं के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रेरित होंगे। तीसरे रचना और मनोरंजन के समन्वय से छात्रों में थकान नहीं आयेगी। इसके अतिरिक्त भी कतिपय सिद्धान्त इस विषय के लिये लाभप्रद है तथा शिक्षण को रोचक बनाते हैं, ये निम्नलिखित हैं–

1. विभाजन का सिद्धान्त,
2. प्रेरणा का सिद्धान्त,
3. लोकतान्त्रिक आचरण का सिद्धान्त,
4. व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करने का सिद्धान्त,
5. आवृत्ति का सिद्धान्त,
6. अन्य अध्ययन व विषयों के साथ समन्वय का सिद्धान्त,
7. सहायक सामग्री के साथ प्रयोग का सिद्धान्त।

**प्रश्न 11. पर्यावरणीय अध्ययन में शिक्षण विधि का अर्थ आवश्यकता तथा महत्त्व पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर–** **शिक्षण विधि** (Teaching method)–किसी भी विषय के ज्ञान को छात्रों तक पहुँचाने के ढंग को शिक्षण-विधि तथा शिक्षण पद्धति कहा जाता है। साधारण शब्दों में किसी भी व्यवस्थित और निश्चित कार्य प्रणाली को पद्धति या विधि कहा जाता है। विधि के द्वारा किसी कार्य को उचित प्रकार से करते हैं और उसमें सफलता प्राप्त करते हैं। शिक्षण भी एक ऐसा कार्य या कलता है, जिसमें अध्यापक बालकों को ज्ञान प्रदान करता है। इस कार्य प्रणाली की व्याज़्या ही शिक्षण पद्धति या शिक्षण प्रणाली कहलाती है। अन्य शब्दों में शिक्षण विधि बालकों को ज्ञान प्रदान करने की एक कला है।

**ई. बी. वेस्ले** के अनुसार–''शिक्षा में शिक्षण विधि नामक शब्द शिक्षक द्वारा पथ प्रदर्शित की हुई उन क्रियाओं की एक माला है जो छात्रों के द्वारा सीखने में परिणित हो जाती है।''

संक्षेप में शिक्षण विधि एक प्रक्रिया है जो एक चरण में आबद्ध न होकर अनेक चरणों द्वारा निर्मित तथा चरणों का समन्वित रूप है। 'विधि' या 'पद्धति' को जन्म देती है।

**शिक्षण विधि की आवश्यकता तथा महत्त्व** (Need of Importance of Teaching Method)–श्रीमति एस. के. कोचर के अनुसार–''जिस प्रकार एक सैनिक को लड़ने के लिये विभिन्न हथियारों का ज्ञान होना आवश्यक है, उसी प्रकार शिक्षक को भी शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों का ज्ञान आवश्यक है। किस समय कौन-कौन सी पद्धति अपनाये, यह उसके निर्णय पर निर्भर है।'' इसी प्रकार माध्यमिक शिक्षा आयोग ने एक स्थल पर लिखा है–''जहाँ तक सर्वोत्तम

For more detail: - http://www.gurukpo.com

पाठ्यक्रम एवं पूर्ण पाठ्यक्रम भी मृततुल्य है जबकि उसके लिये उचित शिक्षण-पद्धति और कुशल शिक्षकों की व्यवस्था न हो।''

उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट हो जाता है कि किसी विषय के शिक्षण को सफल प्रभावशाली, रोचक तथा सरल बनाने के लिए शिक्षण-विधियों की आवश्यकता निम्न प्रकार से होती है-

1. शिक्षण विधि के द्वारा छात्रों को समुचित ज्ञान दिया जाना आसान एवं रुचिकर रहता है।
2. शिक्षण विधियाँ छात्रों की ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करती हैं।
3. शिक्षण विधियाँ शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करती हैं।
4. उत्तम शिक्षण विधि द्वारा छात्रों के समक्ष कठिन विषयवस्तु को भी सरल रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
5. शिक्षण की विधि से छात्रों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन लाया जा सकता है।
6. छात्रों में तार्किक शक्ति का विकास करने में शिक्षण विधि विशेष सहायक होती है।

**प्रश्न 12. पर्यावरण अध्ययन में कहानी कथन विधि का अर्थ समझाइये।**

**या**

**कहानी कथन विधि क्या है? इसके लाभ तथा दोष बताइये।**

**उत्तर-** **कहानी-कथन विधि** (Story telling method)-पर्यावरणीय अध्ययन की पाठन सामग्री कहानी के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से बच्चों को सुनायी जा सकती है। महावीर स्वामी, बुद्ध, गाँधी तथा शिवाजी की कथाएँ रोचक ढंग से बालकों के सम्मुख प्रस्तुत की जानी चाहिए। कहानी अधिक लम्बी न हो तथा उसमें आवश्यकतानुसार सहायक सामग्री का भी प्रयोग किया गया हो। कहानी के मध्य में (बीच-बीच में) प्रश्न भी किये जा सकते हैं।

**एफ. आर. वाट्स** लिखते हैं-''कहानी 13 वर्ष की अवस्था तक के बालकों को इतिहास पढ़ाने पर मुख्य साधन होना चाहिए।'' भूगोल के शिक्षण में भी कहानी कथन विधि का प्रयोग प्रभावशाली ढंग से किया जाना चाहिए।

**श्री नाथूराम शर्मा** के शब्दों में-''जिस प्रकार इतिहास-शिक्षण में छोटी आयु के बालक को ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी देने के लिये कहानियों का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार निम्न कक्षाओं में कहानी के माध्यम से मानव-भूगोल के मुख्य तत्त्व छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किये जा सकते हैं।''

इस स्तर पर कहानी-कथन पद्धति और अधिक सफल हुई है, क्योंकि वह अधिक मनोवैज्ञानिक है। कहानी के माध्यम से छात्रों में नैतिक गुणों का विकास भी किया जा सकता है।

**कहानी-कथन विधि के लाभ**-कहानी-कथन विधि के निम्नलिखित लाभ होते हैं-

1. यह मौखिक प्रस्तुतीकरण की विधि है।
2. इस विधि से पाठ में छात्रों की सहज रुचि बनती है।

3. पाठ में सरलता एवं सहजता आ जाती है।

4. विषयवस्तु स्वभाविक एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत होती है।

5. यह विधि छात्रों के गुप्त भावों को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती है।

6. महापुरुषों की जीवनी पढ़कर छात्र प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

7. इस विधि द्वारा छात्रों की कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति तथा चिन्त शक्ति का विकास होता है।

8. जार्विस के अनुसार यह विधि छात्रों में सद्गुणों तथा आदर्शों के निर्माण एवं चारित्रिक विकास में सहायक है।

**कहानी-कथन विधि के दोष** (Demerits of story telling method)–इस विधि में निम्नलिखित दोष हैं–

1. इस विधि का प्रयोग करने में अध्यापक अधिक क्रियाशील रहता है। फलतः छात्रों का सक्रिय सहयोग पाठ के विकास में नहीं रहता।

2. प्रत्येक अध्यापक पाठ को कहानी के माध्यम से पढ़ाने में सक्षम नहीं होता और फिर पाठ में अध्यापक की कुछ भी कमी के कारण कृत्रिमता का आभास हो सकता है।

**प्रश्न 13. अभिनय विधि किसे कहते हैं? अभिनय विधि की विशेषताएँ तथा अभिनय विधि की सीमाएँ बताइये।**

**उत्तर** **अभिनय विधि** (Dramatization method)–पर्यावरणीय अध्ययन की यह सर्वाधिक सजीव और प्रभावशाली विधि है। इसमें किसी घटना या पाठ्य वस्तुओं को जीवित रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है। इस विधि के द्वारा छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जा सकता है। यह विधि छात्रों में आत्मविश्वास तथा आत्माभिव्यंजना शक्ति का भी विकास करती है।

**श्री माथुर** के शब्दों में–''इतिहास शिक्षक समय-समय पर आवश्यकतानुसार पाठ में रोचकता तथा सरसता लाने के लिये तथा सूक्ष्म भावनाओं को प्रदर्शित करने एवं छात्रों को वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराने के लिये अभिनय विधि का प्रयोग करते हैं। इतिहास के पाठ का अभिनय करने से छात्रों की भावना और कल्पना शक्ति का विकास होता है। अभिनय करके छात्र स्वयं जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का अनुभव प्राप्त करते हैं।''

इतिहास के समान ही नागरिकशास्त्र के शिक्षण में स्वास्थ्य के नियमों, सामाजिक कुरीतियों, ग्रामीण समस्याओं आदि पर अभिनय विधि का प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

छोटी कक्षाओं में अभिनय विधि का विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि बालक इस स्तर पर खेल-खेल में ज्ञान प्राप्त करने में विशेष आनन्द लेते हैं। यह विधि क्रियाशीलता सजीवता तथा सरसता उत्पन्न करती है।

**अभिनय विधि की विशेषताएँ** (Characteristics of Dramalization)–अभिनय विधि का प्रयोग बहुत प्रभावी होता है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. देखने वालों में भी भावों एवं विचारों की दृष्टि से स्पष्टता आती है।
2. शिक्षार्थी को इस कार्य में अत्यधिक रुचि होती है, जो वे करते हैं, समझते हैं, स्थायी होता है।
3. इसके माध्यम से ज्ञान चार स्रोतों–कान, आँख, वाणी तथा शारीरिक क्रिया द्वारा प्राप्त होता है।
4. इस विधि के प्रयोग से शिक्षार्थी में समाजीकरण की प्रक्रिया पनपती है।
5. अभिनय में भाग लेने वाला जिस व्यक्ति, जिस पात्र की भूमिका का निर्वाह करता है, उसके भावों को भली प्रकार से समझ भी लेता है।

**अभिनय विधि की सीमाएँ** (Limitations of Dramatization method)–इस विधि की निम्नलिखित सीमाएँ हैं–

1. इस विधि के औपचारिक स्वरूप का सदैव प्रयोग नहीं किया जा सकता।
2. कक्षाध्यापन की यह सम्पूर्ण विधि नहीं है। यद्यपि पूरक विधि के रूप में इस विधि का उपयोग कर सकते हैं।
3. इस विधि से पाठ्यक्रम पूरा कराने में समय अधिक लगता है।
4. अपेक्षाकृत इस विधि का औपचारिक स्वरूप व्ययसाध्य है।

**प्रश्न 14. खेल विधि की परिभाषा दीजिए। खेल विधि में प्रयुक्त कार्यों का वर्गीकरण कीजिए तथा इस विधि में प्रयुक्त खेलों के प्रकार बताइये।**

**उत्तर**– खेल बालक की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। खेल द्वारा बालक में नयी तथा उपयोगी सामाजिक आदत का निर्माण किया जा सकता है। खेल द्वारा आदतों का निर्माण, सामान्य शिष्टाचार, समूह व्यवहार आदि की शिक्षा सरलता से दी जा सकती है।

**खेल विधि का अर्थ एवं परिभाषाएँ**–खेल विधि का अर्थ तथा परिभाषाओं का अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

**ग्लूकनू** ने खेल की परिभाषा इस प्रकार दी है–''जो कार्य हम स्वेच्छा से स्वतन्त्रतापूर्वक वातावरण में करें, वही खेल विधि है।''

**स्टर्न** के अनुसार–''खेल एक ऐच्छिक तथा आत्मनियंत्रित क्रिया है।''

**हाजेन एण्ड हाजेन** के अनुसार–''वह विधि जो छात्रों को उसी उत्साह से सीखने की योग्यता प्रदान करती है, जो उनके स्वाभाविक खेल में विद्यमान है। खेल विधि के नाम से जानी जाती है।''

**खेल में प्रयुक्त कार्यों का वर्गीकरण** (Classification of play-way works)–खेल में प्रयुक्त कार्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

1. **ज्ञान की खोज प्रधान कार्य**–वस्तु-संकलन, स्थान, भ्रमण और पत्रिकाओं के माध्यम से विषयवस्तु का ज्ञान कराना।

2. **क्रिया द्वारा कौशल कार्य**–चित्र, खिलौना, मॉडल, कक्षा सज्जा आदि के दायित्वों का ज्ञान कराना।

3. **क्षमता प्रदान कार्य**–सेवा टोली, सहयोगी दल आदि का संचालन।

4. **अभिव्यक्ति प्रधान**–लेख, कहानी, भाषण, वाद-विवाद, अन्यताक्षरी, नाटक आदि कार्यों का आयोजन करना।

**खेलों के प्रकार**–खेल विधि की कोई निश्चित रूपरेखा नहीं है। खेलों के प्रकार एवं प्रयोग शिक्षक की सूझ-बूझ क्षमता, सृजनात्मक शक्ति, बालक की रुचि एवं क्षमता तथा उपलब्ध साधन-सुविधाओं पर निर्भर है।

1. **बालगीत**–यह छोटी कक्षा की खेल विधि में प्रमुख तत्त्व है। बालगीतों पर आधारित विभिन्न प्रकार के खेल आयोजित किये जा सकते हैं, जैसे–रीति-रिवाज, त्यौहार, देशभक्ति खेलों का आयोजन आदि।

2. **रचनात्मक कार्य**–खेल एक प्रकार का रचनात्मक कार्य है। रचनात्मक कार्य मिट्टी, कुट्टी, एवं कागज आदि के धरातल पर किया जा सकता है। इस विधि में सृजनात्मक शक्ति के विकास के पूरे अवसर मिलते हैं।

3. **अभिनय एवं सामाजिक खेल**–यह खेल का लोकप्रिय स्वरूप है। बालक अनुकरण करने में प्रसन्नता अनुभव करता है। यह आत्माभिव्यक्ति को अधिक अवसर देता है। झाँकी, एकांकी आदि के प्रदर्शन इसी श्रेणी में आते हैं।

**प्रश्न 15. निरीक्षण विधि का अर्थ बताइये तथा इस विधि की विशेषताएँ भी बताइये।**

**उत्तर**– अध्यापक को शिक्षण कार्य करते समय छात्रों की क्रियाओं का अवलोकन एवं निरीक्षण करना होता है। निरीक्षक एवं अवलोकन कार्य की उपयुक्त विधि का उपयोग करना एं कुशल अध्यापक का दायित्व होता है।

**निरीक्षण विधि का अर्थ** (Meaning of observation method)–निरीक्षण का अर्थ है किसी घटना या वस्तु का निरीक्षण करते हैं तो उस वस्तु पर अपने को केन्द्रित करते हैं। यह निरीक्षण ध्यानपूर्वक नहीं है तो उसे निरीक्षण न कहकर देखना कहा जाता है। जानने की स्वाभाविक क्रिया ही मूल आधार है।

**योकम** तथा **सिज़्सन** ने निरीक्षण विधि को इस प्रकार परिभाषित किया है–''निरीक्षण ज्ञानेन्द्रिय सज़्बन्धी सीखने की विधि है, जिसमें व्यक्ति को अपने चारों ओर के संसार का ज्ञान प्राप्त होता है।''

**निरीक्षण विधि की विशेषताएँ** (Characterstics of observation method)–निरीक्षण विधि की विशेषताओं का अध्ययन निज़् प्रकार से किया जा सकता है–

1. यह मनोवैज्ञानिक विधि है। इसके प्रयोग से छात्रों केी ज्ञानेन्द्रियों का विकास होता है।

2. इससे छात्रों की चिन्तन शक्ति एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।

3. निरीक्षण विधि के प्रयोग से बालक के ज्ञान के भण्डार में स्थायी वृद्धि होती है।

4. यह विधि छात्रों में विषय के प्रति रुचि तथा जिज्ञासा उत्पन्न करती है।

5. इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।

6. यह विधि बाह्य जगत की जानकारी प्रापत कराने में हमारी सहायता करती है।

7. प्रत्यक्ष एवं सीधे सज़्पर्क के कारण किसी भी ज्रन्ति के बने रहने की सज़्भावना नहीं होती है।

8. शिक्षार्थी का अनुभव स्पष्ट एवं व्यवस्थित होता है। फलत: यह स्थायी होता है, जो कल्पना का ठोस आधार बनने में सहायक है।

9. इस विधि में शिक्षार्थियों को वस्तुओं एवं क्रियाओं आदि का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। अत: वे उनके मन में अधिक स्पष्ट प्रभाव डालती है। ये अनुभव अधिक समय तथा स्मृति में रहते हैं तथा थोड़ा अज़्यास मिलने पर पुन: स्मृति में आ जाते हैं।

**प्रश्न 16. प्रश्नोत्तर विधि क्या है तथा प्रश्नोत्तर विधि का क्या उपयोग है? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर–** इस विधि के जन्मदाता सुकरात थे। उन्होंने अव्यवस्थित ज्ञान को प्रश्नों के माध्यम से व्यवस्थित किया। शिक्षण शिक्षण की कोई भी ऐसी विधि नहीं है जिसमें प्रश्नोत्तर विधि का उपयोग नहीं किया जाता हो। सत्य तो यह है कि प्रश्न करने एवं उनके उत्तरों को ठीक प्रकार से संयोजित कर विषय वस्तु को निखारने की कला शिक्षण व्यवसवाय का मूल आधार है। प्रश्नोत्तर विधि को प्रश्न एवं उनके उत्तरों का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध स्वरूप देकर विकसित किया गया है।

**प्रश्नोत्तर विधि का अर्थ–एस. सी. पार्कर** के शब्दों में–''प्रश्नों की समस्त शिक्षण प्रणालियों में एक मौलिक तत्त्व स्वीकार किये बिना शिक्षण–विधियों पर विचार करना असज़्भव होता है। प्रश्न प्रवृत्ति निपुणता के ऊपर समस्त शिक्षात्मक कार्यशीता की कुन्जी है।''

**प्रश्नोत्तर विधि का उपयोग** (Use of Question Answer Method)–प्रश्नोत्तर विधि का उपयोग निज़्नांकित बिन्दुओं को दृष्टि में रखकर किया जाता है–

1. छात्रों के पूर्व ज्ञान का परिचय प्राप्त करना। बिना पूर्वज्ञान का परिचय प्राप्त किये नवीन ज्ञान नहीं कराया जा सकता।

2. नवीन ज्ञान से परिचय करना।

3. छात्रों की शंका और कठिनाइयों का ज्ञान कराना।

4. यह पता लगाना की छात्र पाठ को ठीक प्रकार से समझ रहे हैं या नहीं।

5. छात्रों को कक्षा में चेतन रखना तथा उनके ध्यान को पाठ की ओर केन्द्रित करना।

6. यह पता लगाना कि अर्जित किये ज्ञान को क्या छात्र ठीक प्रकार से अभिव्यक्त कर सकते हैं या नहीं।

7. पढ़े गये पाठ की पुनरावृत्ति करना, जिससे ज्ञान प्राप्त छात्रों के मस्तिष्क में स्थायी रह सके।

8. प्रत्यक्ष एवं सीधे सज़र्क के कारण किसी भी भ्रान्ति के बने रहने की सज़्भावना नहीं रहती।

9. शिक्षार्थी का अनुभव स्पष्ट एवं व्यवस्थित होता है। फलत: वह स्थायी होता है, जो कल्पना का ठोस आधार बनने में सहायक है।

10. छोटी आयु के शिक्षार्थियों के अनुभव बहुत ही सीमित होते हैं। अत: उनके शिक्षण में प्रत्यक्ष दर्शन और सीधा सज़र्क सहायक होता है। अत: यह विधि छोटी आयु के बालकों के लिये अपेक्षाकृत उपयोगी है।

11. इस विधि में शिक्षार्थियों को वस्तुओं एवं क्रियाओं आदि का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। अत: वे उनके मन में अधिक स्पष्ट प्रभाव डालती है। ये अनुभव अधिक समय तक स्मृति में रहते हैं तथा थोड़ा अज़्यास मिलने पर पुन: स्मृति में आ जाते हैं।

# वार्तालाप विधि

## (Discussion-Method)

**प्रश्न 17. वार्तालाप विधि का अर्थ बताइये तथा वार्तालाप विधि के क्या लाभ हैं?**

**उत्तर–** वार्तालाप विधि को विचार विनिमय विधि भी कहा जाता है। आजकल छात्रों को एकमात्र निष्क्रिय श्रोता नहीं माना जाता वरन् उनसे यह आशा की जाती है कि वह स्वयं भी ज्ञान आदान-प्रदान की प्रक्रिया में सहयोग हो, यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि बालक जिस ज्ञान को स्वयं सक्रिय होकर प्राप्त करता है। वह उसके मस्तिष्क में स्थायी हो जाता है। बालक को ज्ञान प्राप्त करने में सक्रिय करने के लिये वार्तालाप विधि का प्रयोग किया जाता है।

**वार्तालाप विधि का अर्थ** (Meaning of Discussion method)–वार्तालाप विधि शिक्षण की वह विधि है जिसमें अध्यापक और छात्र परस्पर मिल-जुलकर किसी प्रकरण या समस्या के सज़्बन्ध में स्वतन्त्र वातावरण में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

**योकम** तथा **सिज़्सन** के अनुसार–''वार्तालाप का एक विशिष्ट स्वरूप है, जिसमें बातचीत की अपेक्षा विस्तृत एवं विवेकयुक्त सिचारों का आदान-प्रदान होता है। सामान्यत: वार्तालाप में महत्त्वपूर्ण विचारों को सज़्मिलित किया जाता है।''

**जेज़्स एस. ली** के अनुसार–''विचार विनिमय एक शैक्षिक सामूहिक क्रिया है, जिसमें शिक्षक तथा छात्र सहयोगी रूप से किसी समस्या या प्रकरण पर बातचीत करते हैं।''

**वार्तालाप विधि के लाभ** (Advantage of Discussion method)–इस विधि के निज़्नलिखित लाभ हैं–

1. यह शिक्षा की प्रजातांत्रिक प्रणाली है। इसमें छात्र जो भी ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह स्वतन्त्र वातावरण में प्राप्त करते हैं।

2. इस विधि द्वारा छात्र अपने भावों एवं विचारों को व्यवस्थित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त करते हैं।

3. यह विधि छात्रों में सहयोग और सहिष्णुता की भावना का विकास करती है।

4. यह विधि छात्रों को मिल-जुलकर कार्य करने की प्रेरणा देती है।

5. यह विधि छात्रों की चिन्तन तथा तर्क शक्ति का विकास करती है।

6. इससे छात्रों में स्वस्थ आलोचना कररने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

7. यह विधि अधिक रोचक, स्वाभाविक तथा प्रभावी सिद्ध हुई है।

8. सुनियोजित वार्तालाप विधि ही ज्ञानार्जन में सहायक होती है।

**प्रश्न 18. भ्रमण विधि तथा परिवीक्षित अध्ययन विधि की परिभाषाएँ लिखिए तथा परिवीक्षित विधि की सभी विधियों के बारे में बताइये।**

**उत्तर–** **भ्रमण विधि** (Excursion method)–भ्रमण विधि से छात्र भौगोलिक वास्तविकता से परिचित होते हैं और वे विभिन्न वस्तुओं का निरीक्षण करके ही ज्ञान प्राप्त करते हैं।

**जेज़्म फेयरग्रीव** के शब्दों में–''वस्तुओं के सही निरीक्षण पर ही भूगोल का वास्तविक ज्ञान आधारित है। भूगोल का अधिकांश भाग मस्तिष्क की अपेक्षा पैरा द्वारा सीखा जा सकता है।''

भ्रमण विधि का सर्वाधिक लाभ छोटे बालकों को होता है। वे कक्षा से बाहर जाकर विभिन्न भौगोलिक दृश्यों तथा प्राकृतिक स्थानों को देखते हैं तो उनमें विशेष उत्साह का संचार होता है। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह छात्रों को आसपास के पर्वत, नदी, पार्क, खेत तथा कारखानों आदि का निरीक्षण कराने के लिये भ्रमणों का आयोजन करे।

**परिवीक्षित अध्ययन विधि का अर्थ एवं परिभाषाएँ** (Meaning and definitionns of supervised study method)–

1. **बाइनिंग** एवं **बाइनिंग** (Bining and Bining)–''निर्देशित विधि से हमारा आशय उस अध्यापक द्वारा कक्षा अथवा विद्यार्थियों के समूह का उस समय निरीक्षण करने से है, जबकि वे अपनी मेजों या डेस्कों पर कार्य करने में संलग्न रहते हैं।''

2. **क्लार्क** व **स्टार** (Clark and Star)–''निर्देशित अध्ययन छात्र को अध्यापक के मार्गदर्शन में कार्य करने तथा अध्यापक को छात्रों द्वारा किये गये अध्ययन कार्य को परिवीक्षित करने का समान रूप से अवसर प्रदान करता है।''

**बाइनिंग** एण्ड **बाइनिंग** के अनुसार इनके विधि रूप हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. **सज़्मेलन विधि** (Conference method)–इस विधि के अन्तर्गत कुछ सज़्मेलन आयोजित किये जाते हैं तथा बालकों की व्यक्तिगत कठिनाइयों का निवारण पूरे सज़्मेलन में किया जाता है। यह सज़्मेलन विचारगोष्ठी के रूप में सज़्पन्न होता है।

2. **विशिष्ट अध्यापक विधि** (Special teaching method)–इसके अन्तर्गत एक विशिष्ट अध्यापक बालक में दोषों, उनकी भ्रान्ति, धारणाओं एवं कठिनाइयों को दूर करता है।

3. **विभाजित कालांश विधि** (Divided period method)–इस विधि में एक ही कालांश के अन्तर्गत दो अध्यापक बालकों के कार्यों का निरीक्षण करते हैं।

4. **द्वि-कालांश विधि** (Double period method)–इस विधि के अनुसार एक ही विषय सामग्री के अध्ययन के लिये दो कालांश दिये जाते हैं। प्रथम कालांश में निश्चित विषय को पढ़ाने का आदेश देकर उससे सम्बन्धित भूमिका प्रस्तुत की जाती है और दूसरे कालांश में उनकी अध्ययन विधियों का निरीक्षण किया जाता है।

**प्रश्न 19. समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि की परिभाषा बताइये तथा इसका महत्त्व भी बताइये।**

**उत्तर**– समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का अर्थ एवं परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

**बाइनिंग** (Bining) के मतानुसार–''समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि, सामाजिक वाद-विवाद अथवा विचार-विमर्श विधि ही है।''

**बाइनिंग** एवं **बाइनिंग** के शब्दों में–''समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि ही सामाजिक वाद-विवाद विधि कहलाती है।''

**बाइनिंग** एवं **बाइनिंग** (Bining and Bining) ने इस सन्दर्भ में अपने उदार दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करते हुये उल्लेख किया है कि ''कोई भी कक्षा-सत्र, जो एक वर्ग के रूप में सामूहिक चेतना एवं वैयक्तिक उत्तरदायित्व का प्रदर्शन करें, समाजीकृत अभिव्यक्ति है।''

**वैस्ले के मतानुसार** (Wesley) ''सामाजिक अभिव्यक्ति एक आदर्श है जो शिक्षण में इस प्रकार के प्रयोग की कल्पना है, जिसके अन्तर्गत कक्षा के समस्त छात्र सहयोग व सद्भावना से ज्ञान का अर्जन कर सकें।''

इस विधि के अन्तर्गत कक्षा की कृत्रिमता को समाप्त कर उसके स्थान पर स्वाभाविकता उत्पन्न की जाती है ताकि छात्रों के स्वभाव एवं रुचि के अनुसार वह स्वतन्त्रतापूर्वक ज्ञान का अर्जन कर सकें।

**संग्रहालय विधि का महत्त्व** (Importance of mussum method)–सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण में संग्रहालय का विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक युग संग्रहालयों का विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक युग में विद्यालयों में संग्रहालयों के महत्त्व में निरन्तर वृद्धि हो रही है। संग्रहालय में उपलब्ध वस्तुओं के माध्यम से छात्रों को ज्ञान प्रदान करना अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होता है। संग्रहालय के द्वारा छात्रों को ज्ञान प्राप्त करना अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होता है।

संग्रहालय के महत्त्व को स्पष्ट करते हुये दीक्षित एवं बघेला (Dixit and Bagala) ने उल्लेख किया है कि, ''शिक्षा के मार्गदर्शन में संग्रहालय में उपलब्ध पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सामग्री का अध्ययन करना भी अतीत को सजीव बनाने का माध्यम है।''

संग्रहालय के महत्त्व को निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर सरलतापूर्वक समझा जा सकता है–

1. संग्रहालय के माध्यम से बालक विभिन्न प्राचीन वस्तुओं को देखकर तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत होता है तथा उसे उसके बारे में पूर्ण रूप से स्थायी सएवं वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है।

2. बालकों में भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं को एकत्र करने की आदत होती है। बालकों को इस प्रकार की आदत को शिक्षा से सम्बन्धित वस्तुओं को इकट्ठा करने हेतु प्रेरित करके उन्हें विविध प्रकार की शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

3. छात्रों को इस प्रकार से प्रोत्साहित किया जाय कि वे कलात्मक चित्रों को बनायेंगे तो उन्हें विद्यालय के संग्रहालय में स्थान प्रदान किया जायेगा, इससे बालक अपने मस्तिष्क द्वारा रचनात्मक तथा निर्माण सम्बन्धी कार्य करेगा।

4. संग्रहालय के माध्यम से छात्रों के मस्तिष्क को तार्किक बनाने में अत्यधिक सहयोग प्राप्त होता है। इसके द्वारा शिक्षक छात्रों के दृष्टिकोण में सहायता प्रदान कर उन्हें उदार बनाता है।

**प्रश्न 20. वाद-विवाद विधि का क्या अर्थ है? इसकी परिभाषा लिखिए।**

**उत्तर-** इस विधि में छात्रों को वाद-विवाद का अवसर दिया जाता है। इस प्रकार के वाद-विवादों से छात्रों में कक्षा की नीरसता समाप्त हो जाती है। किसी समस्या का समाधान सहयोग और सहकारिता के आधार पर किया जाता है। छात्रों को प्रश्न पूछने की छूट रहती है। वाद-विवाद के मध्य छात्र अपनी शंकाओं का भी समाधान करते जाते हैं। उनमें तर्कशक्ति का विकास होता है। छात्र अपने विचारों को व्यवस्थित करने का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। यह विधि छात्रों में आत्मविश्वास भी उत्पन्न करती है।

**वाद-विवाद विधि का अर्थ एवं परिभाषाएँ** (Meaning and definations of debate method)-शिक्षण में वाद-विवाद विधि के महत्त्व को समझने से पूर्व उसके अर्थ को समझना आवश्यक है। आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार अधिगम के लिये छात्र एवं शिक्षक दोनों के मध्य अधिकाधिक सक्रियता व क्रियाशीलता आवश्यक है।

इस विधि के अन्तर्गत प्रत्येक बालक को समान अवसर प्राप्त होता है। जब तक विषय अथवा समस्या के सन्दर्भ में सहभागी अर्थात् छात्र को पूर्ण ज्ञान नहीं है। जब तक वाद-विवाद का कोई महत्त्व नहीं है। वाद-विवाद के माध्यम से छात्र कुछ नवीन चीजें सीखता है तथा अपने विचारों को स्पष्ट बनाने के साथ-साथ सार्थक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों द्वारा दी गयी परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं- **1. क्लार्क** एवं **स्टार** के अनुसार- ''वाद-विवाद अनावश्यक तथा निरर्थक तथ्यों का संग्रह नहीं है। वाद-विवाद शिष्ट, तार्किक एवं ज्ञानयुक्त विचार-विमर्श है, प्रश्नोत्तर नहीं। वैज्ञानिक वाद-विवाद वह है, जिसमें सभी समान रूप से भाग लें, लेकिन यह अनिवार्य नहीं कि सभी बोले, इसी प्रकार वाद-विवाद व्यक्तियों का अहम् भाव प्रदर्शित करने हेतु बातचीत करना भी नहीं है और न अपने दृष्टिकोण को दूसरों पर लादना है। परन्तु वास्तविक रूप से न तो भाषण ही है और न सामाजिक अभिव्यक्ति, यह तो इन सभी से पृथक् है।''

**2. जेक्स एम. ली.** के अनुसार–''वाद-विवाद एक शैक्षिक सामूहिक क्रिया है, जिसके अन्तर्गत शिक्षक एवं छात्र सहयोगी रूप में किसी समस्या अथवा प्रकरण पर विचार-विमर्श करते हैं।''

**3. योकम** एवं **सिज़्मसन** के अनुसार–''वार्तालाप का एक विशिष्ट स्वरूप वाद-विवाद कहलाता है। सामान्य वातार्लाप की अपेक्षाकृत इसमें अधिक विस्तृत एवं विवेकपूर्ण विचारों का आदान-प्रदान होता है। सामान्य रूप से वाद-विवाद में महत्त्ववपूर्ण विचारों को सज़्मिलित किया जाता है।''

**प्रश्न 21. पाठ्यक्रम का अर्थ स्पष्ट करते हुए प्राथमिक स्तर पर राजस्थान के सामाजिक पर्यावरण अध्ययन की कक्षा-3 से 5 तक के पाठ्यक्रम की समीक्षा कीजिए।**

उत्तर– **पाठ्यक्रम का अर्थ एवं अवधारणा** (Meaning and concept of curriculum)–पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा के curriculum का हिन्दी रूपान्तरण है, जो लैटिन भाषा से लिया गया है। विद्यालय में शिक्षक एवं शिक्षार्थी द्वारा किसी सुनिश्चित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु किये गये समन्वित क्रिया-कलाप को ही पाठ्यक्रम कहा जाता है।

शाब्दिक दृष्टि से देखें तो पाठ्यक्रम शब्द दो शब्दों का मेल है–पाठ्य तथा क्रम। पाठ्य का अर्थ है–पढ़ने योग्य तथा क्रम का अर्थ है–व्यवस्था अर्थात् पढ़ने योग्य विषय वस्तु की व्यवस्था। अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम के लिए हम ''कैरीकूलम'' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'क्यूररे' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'दौड़ना'। इस प्रकार कैरीकुलम का अर्थ हुआ ''दौड़ का मैदान'', जिस प्रकार दौड़ के मैदान में धावक के दौड़ने की सीमा तथा लक्ष्य निर्धारित कर दिये जाते हैं। ठीक उसी तरह पाठ्यक्रम भी छात्र के लिए अध्ययन विषय वस्तु की सीमाएँ तथा लक्ष्य निर्धारित व्यय देता है। इस दृष्टिकोण से पाठ्यक्रम एक ऐसा दौड़ का मैदान है, जिसकी सीमाओं में दौड़कर छात्र शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करता है।

**1. कनिंघम के अनुसार**–''यह (पाठ्यक्रम) कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक साधन है, जिसके द्वारा वह अपनी सामग्री (छात्र) को अपने स्टूडियो (विद्यालय) में अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार वांछित रूप देता है।''

**2. फ्रोबेल के शब्दों में**–''पाठ्यक्रम को मानव जाति के समूचे ज्ञान एवं अनुभव का केन्द्र बिन्दु समझना चाहिये।''

''Curriculum should be conceived as an epitoml of the rounded whole of the knowledge and experience of the human race.''**–Frobel**

**3. मुनरों के शब्दों में**–''पाठ्यक्रम में वे सभी अनुभव शामिल होते हैं, जो विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग लाये जाते हैं।''

''Curriculum embodies all the experiences which are utilsed by the school to attain the aims of education.'' **–Munroe**

**सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन की विषय वस्तु** (Content of Social Environment Learning)–प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर सामाजिक पर्यावरण अध्ययन को एक अनिवार्य विषय

के रूप मे पढ़ाया जाना चाहिये, यह आशा की जाती है कि बालकों को इस विषय से ऐसा ज्ञान तथा ऐसे अनुभव प्राप्त होंगे कि वे प्रजातंत्रात्मक समाज हेतु उपयोगी नागरिक बन सकें।

**सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन विषय के उद्देश्य** (Objectives of Social Environmental learing subject)–निदेशालय प्राथमिक शिक्षा बीकानेर द्वारा प्रकाशित शिक्षाक्रम (कक्षा 1 से 5 तक) में अधोलिखित सामाजिक पर्यावरीय अध्ययन विषय के उद्देश्य वर्णित हैं–

1. बालक में सामाजिक पर्यावरीय के प्रति जिज्ञासा एवं चेतना उत्पन्न करना।
2. बालकों में प्राकृतिक व सामाजिक पर्यावरण का निरीक्षण करने की क्षमता का विकास करना तथा नवीन अनुभव प्राप्त करने के लिए अवसर प्रस्तुत करना।
3. बालकों में ज्ञानोपार्जन तथा स्वयं को सुखी एवं स्वस्थ बनाने के लिए पर्यावरण का सदुपयोग करने की दक्षता उत्पन्न करना।
4. समाज में व्याप्त अन्ध-विश्वास एवं रूढ़िवादिता के प्रति बालकों को सतर्क कर उन्हें दूर करने की प्रवृत्ति जागृत करना।
5. बालकों में जनतांत्रिक दृष्टिकोण, धर्म-निरपेक्षता, समानता, भावात्मक एकता, राष्ट्रीयता, अन्तरराष्ट्रीयता एवं समाजवादी भावनाओं का विकास करना।

**वर्तमान पाठ्यक्रम के दोष** (Demerits)–

1. संकुचित दृष्टिकोण
2. पुस्तकीय ज्ञान पर बल
3. लचीलेपन का अभाव 4. विविधता का अभाव
5. विषयों में सहसम्बन्ध का अभाव
6. सैद्धान्तिक विषय अधिक

**पाठ्यक्रम की विसंगतियों को दूर करने के लिए सुझाव** (Suggestions)–

1. पाठ्यक्रम निश्चित करने से पूर्व उद्देश्य निश्चित कर लेने चाहिए।
2. पाठ्यक्रम में विषय-वस्तु इस प्रकार रखी जानी चाहिए कि विद्यार्थियों को करके सीखने के अधिक अवसर मिले।
3. पाठ्यक्रम बालकों की रुचि, योग्यता और अभिवृत्ति के आधार पर हो।
4. पाठ्यक्रम को बोझ न मानकर उनको समन्वयकारी बनाया जाए।

## सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन का पाठ्यक्रम

(Curriculum of Social Environmental Learning)

कक्षा-3 स्तर : (हमारा परिवेश पर्यावरण अध्ययन)

कक्षा-4 स्तर : पर्यावरण अध्ययन भाग-I (सामा. विज्ञान)

कक्षा-4 स्तर : पर्यावरण अध्ययन भाग-II (विज्ञान)

For more detail: - http://www.gurukpo.com

कक्षा-5 स्तर : पर्यावरण अध्ययन भाग-I (सा. वि.)

कक्षा-5 स्तर : पर्यावरण अध्ययन भाग-II (विज्ञान)

**कक्षा 1 व 2 के पर्यावरण अध्ययन के प्रकरण**-(i) हमारा परिवार, (ii) हमारा घर, (iii) हमारा विद्यालय, (iv) रोचक कहानियाँ, (v) हमारा आस-पडोस, (vi) हमारी पृथ्वी और (vii) आकाश, वायु और मौसम।

**प्रश्न 22. श्रव्य-दृश्य सामग्री का सञ्ज्ञत्य स्पष्ट कीजिए। किन्हीं दो उपकरणों पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-** **श्रव्य-दृश्य सामग्री का अभिप्राय** (Meaning of Audio-Visual Aids)-प्राचीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का स्थान सर्वोपरि था। शिक्षक अपनी रुचि एवं अभिरुचि के अनुसार ही बालक को शिक्षा देता था। बालक निष्क्रिय श्रोता बना बैठा रहता था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बालक का स्थान अब जो कुछ सीखता है, वह क्रिया और निरीक्षण द्वारा सीखता है। वर्तमान समय में शिक्षण कार्य पूर्णत: मौखिक रूप से नहीं होता है। वह क्रिया और निरीक्षण द्वारा सीखता है। वर्तमान समय में शिक्षण कार्य पूर्णत: मौखिक रूप से नहीं होता है। वरन् शिक्षक को शिक्षण में विभिन्न प्रकार के साधन जुआने पड़ते हैं, जिनसे पाठ विशेष को सरलता से स्पष्ट करने या समझाने के लिए शिक्षक जिन साधनों/उपकरणों का प्रयोग करता है, वे अनुदेशनात्मक सामग्री कहलाते हैं। इन्हें श्रव्य-दृश्य सामग्री भी कहा जाता है।

**शिक्षा शब्दकोश के अनुसार**-''श्रव्य-दृश्य उपकरण कोई युक्ति है, जिसके द्वारा अधिगम प्रक्रिया दृष्टि और/अथवा सुनने की अनुभूति के माध्यम से अग्रसित अथवा प्रोत्साहित हो सकती है।''

**डेन्ट** (Dent) के अनुसार-''दृश्य-श्रव्य सामग्री वह है, जो कक्षा में अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखित या बोली गई पाठ्य सामग्री को समझने में सहायता दे।''

**अनुदेशनात्मक सामग्री के उपयोग के उद्देश्य** (Aims of use of instructional materials)-अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रमुख उपयोग निज़ हैं-

1. छात्रों की श्रव्य एवं दृश्य इंट्रियाँ प्रशिक्षित करना।
2. सामाजिक विज्ञान-शिक्षण को आकर्षक, रोचक एवं प्रभावपूर्ण बनाना।
3. कक्षा शिक्षण के नीरस वातावरण को दूर करने का प्रयास करना।
4. छात्रों के लिए विषयवस्तु को सार्थरक एवं सुग्राह्य बनाना।
5. छात्रों का ध्यान विषय वस्तु में केन्द्रित रखने का प्रयास करना।
6. छात्रों को भाषागत दोषों एवं भ्रमों के निवारणार्थ सहयोग प्रदान करना।
7. छात्रों को ज्ञानार्जन में सहयोग देना।
8. छात्रों के अर्जित ज्ञान को स्थायी बनाने का प्रयास करना।
9. छात्रों की सामाजिक विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

**सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री का महत्त्व** (Importance of Instructional Materials in Teaching of Social Studies)

1. इन्द्रियों से ज्ञान की प्राप्ति (Senses Geteway of knowledge)
2. अधिगम में स्पष्टता एवं मूर्तता (Vividness and Reality to the learning)
3. अधिगम प्रक्रिया को उत्तेजित करने में सहायक (Helps Stimulating the Process of learning)
4. प्रत्यक्ष अनुभव देने में सहायक (Helpful for impating direct experiences)
5. कल्पना शक्ति उत्तेजित करने में सहायक (Stimulate imgination)
6. पिछड़े छात्रों के लिए सहायक (Useful for slow learners)
7. क्रिया करने का अवसर (Opportunities for Activcities)
8. सुदृढ़ ज्ञान की प्राप्ति (Helpful in attaining perfet knowlodge)
9. वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास (Develops scientific attitude)
10. पास में रोचकता लाने के लिए (To make the lesson interesting)

**श्रव्य-दृश्य उपकरण** (Audio-Visual Aids)–इसके अन्तर्गत वे उपकरण आते हैं, जिनमें छात्र श्रवणेन्द्रियों एवं दृश्येन्द्रियों के समन्वित उपयोग के द्वारा ज्ञानार्जन करते हैं। इनमें प्रोजेक्टर, टेलीविजन एवं कज़्यूटर आदि उपयोगी हैं।

**1. प्रोजेक्टर** (Projector)–शिक्षा जगत में प्रोजेक्टर विज्ञान की नवीन देन है, इसका आविष्कार सन् 1920 के लगभग हुआ था। वर्तमान में भारतीय विद्यालयों में इसका उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इसमें फिल्म, फिल्म पट्टी एवं स्लाइडें प्रयुक्त होती हैं।

**शिक्षा-शब्दकोश** में–''प्रोजेक्टर एक साधन है जो पर्दे पर अथवा परावर्तक सतह पर गतिशील फिल्म, चित्र, प्लेट्स, अस्पष्टक वस्तुओं अथवा स्लाइड्स के प्रतिबिज़्बों को समूह के उपयोग के लिये प्रक्षेपित करता है।''

**प्रोजेक्टर की उपयोगिता** (Utility of Projector)–

**2. टेलीविजय** (Television)–वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

**शिक्षा शब्दकोश** में–''टेलीविजन विशेष कैमरों द्वारा गतिशील दृश्य-प्रतिबिज़्बों के सज़्प्रेषण के लिए रेडियो तरंगों के उपयोग की रीति है। भेजने के उपकरण और अधिग्रहण सेट साधारण रूप में लगभग 40 से 50 मीटर तक सज़्प्रेषण के प्रभावपूर्ण विस्तार में सीमित है।''

महत्त्व (Importance)–

टेलीविजन से लाभ (Advabntages of Television)–

टेलीविजन की सीमाएँ (Limitation of Television)–

**प्रश्न 23. सामाजिक पर्यावरण के अधिगम क्षेत्रों के अन्तर्गत कक्षा 1 से 5 की अपेक्षित दक्षताओं को स्पष्ट कीजिये।**

**उत्तर–** **पर्यावरण अध्ययन की दक्षताएँ** (Competancies of Environmental Study)–विद्यार्थियों के लिये सामाजिक पर्यावरण अध्ययन विषय में अन्तर्निहित दक्षताएँ निम्नलिखित हैं–

1. अवलोकन करना, पहचानना, जानकारियाँ एकत्र करना एवं उनको लिखकर रखना।
2. विभेद, तुलना एवं वर्गीकरण करना।
3. चित्र, रेखागणित, मानचित्र, संकेत पढ़ना, बनाना और उपयोग करना।
4. मापना एवं गणना करना।
5. सृजनशीलता का विकास करना।
6. समस्या को पहचानना, अनुमान लगाना तथा समस्या का हल सुझाना।
7. सम्बन्ध निर्भरता, कारण–प्रभाव, अनुकूल एवं समायोजन को जानना, संवेदनशीलता एवं मूल्यों का विकासक रना।
8. तथ्यों को जानना, व्याख्या करना, अवधारणा का विकास करना, अभिव्यक्त करना तथा प्रस्तुत करना।
9. सत्यता एवं परिवर्तन को अनुभव करना एवं समझना।
10. प्रक्रियाओं को समझना, क्रमबद्धता एवं पेटर्न को पहचानना।

**अधिगम क्षेत्र एवं कक्षावार अपेक्षित दक्षताएँ पर्यावरण अध्यान भाग**–I

(Learning field and classwise expected competancies)

**सामाजिक पर्यावरण का अधिगम क्षेत्र**–अधिगम क्षेत्र एवं कक्षावार अपेक्षित दक्षताएँ विस्तार से निम्नानुसार हैं–

1. अपने सामाजिक–नागरिक परिवेश से अन्तःक्रिया कर उसे जानना, समझना तथा परिवेश के प्रति जागरूक होना।
2. अपने सामाजिक–नागरिक परिवेश की जन हितकारी संस्थाओं को जानना तथा उनकी कार्यविधि को समझकर सज्ञानपूर्वक उनसे सहयोग लेना एवं देना।
3. व्यक्ति एवं प्राकृतिक परिवेश के बीच परस्पर प्रभाव डालने वाले सम्बन्धों तथा भौगोलिक स्थितियों को समझना और व्याख्या करना।

**सामाजिक पर्यावरण का अपेक्षित दक्षता क्षेत्र**–पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति में अन्तर्निहित अधिगम–प्रक्रिया के कौशलों को निम्नानुसार वर्गीकृत किया गया है–

1. अवलोकन करना, पहचानना, जानकारियाँ एकत्र करना एवं दर्ज करना।
2. विभेदन, तुलना एवं वर्गीकरण करना।
3. चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र, संकेत, पढ़ना, बनाना एवं उपयोग करना।

4. मापना एवं गणना करना।

5. सृजनशीलता का विकास करना (वस्तुएँ तथा मॉडल बनाना)।

6. परिकल्पनाएँ बनाना, प्रयोग करना, निष्कर्ष निकालना, सामान्यीकरण करना।

7. समस्या को पहचानना, अनुमान लगाना तथा समस्या का हल सुझाना।

8. सातव्य एवं परिवर्तन को अनुभव करना एवं समझना।

9. प्रतिक्रियाओं को समझना, क्रमबद्धता एवं समझना।

**अधिगम क्षेत्र एवं कक्षावार अपेक्षित दक्षताएँ–**

**न्यूनतम अधिगम स्तर तथा अपेक्षित दक्षताओं की अवधारणा** (Concept of minimum learning level and accepted competancies)–न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.– Minimum Learning Level) प्रारम्भिक शिक्षा (प्राथमिक/उच्च प्राथमिक) के स्तर पर सभी विद्यार्थियों को गुणात्मक शिक्षा देने की शैक्षिक व्यूह रचना है। न्यूनतम अधिगम स्तर में ज्ञान के संश्लिष्ट रूप को छोटी–छोटी दक्षताओं में विभाजित कर फिर उसे विश्लेषित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। पाठ्य चर्या में विषयवार दक्षताओं को निर्धारित किया गया है, जिससे शिक्षण–प्रक्रिया में केन्द्रीय दृष्टि विद्यार्थियों में दक्षता के विकास पर हो, विषयवस्तु उसका माध्यम बने और उनमें दक्षता के विकास का मूल्यांकन कर आगे की शिक्षण व्यूह–रचना बने। अतः न्यूनतम अगिम स्तर से अभिप्राय है कि एक निर्धारित निश्चित समयावधि में शिक्षण के पश्चात् प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा न्यूनतम ज्ञान अर्जित किया जाना।

**प्रश्न 24. पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण में इकाई पाठ योजना क्या है? इसकी मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

**उत्तर–** **इकाई योजना** (Unit Plan)

**अर्थ एवं महत्त्व** (Meaning & Importance)

शिक्षण में इकाई का सम्प्रत्यय शिकागो विश्वविद्यालय, केलीफोर्निया के प्रो. एच. सी. मॉरीसन (H. C. Morrisen) 1926 की देन है। इसका उद्देश्य शिक्षण में पारंगुति प्राप्त करना है। इसमें विषय–वस्तु को इकाईयों में बाँट लिया जाता है, जिससे सम्प्रत्ययों एवं विचारों में तारतम्य बना रहता है। इससे सीखने वाला छात्र अवबोध प्राप्त करने में सहजता अनुभव करता है और सरलता से पठित विषयवस्तु में पारंगत हो जाता है।

मॉरीसन ने विषयवस्तु को इकाईयों में विभाजित करने में मनोवैज्ञानिक आधार अपनाया था। वर्तमान समय में प्रचलित इकाई का आधार विषयवस्तु माना गया है और इकाई को उप इकाईयों में विभाजित कर लिया जाता है। इस प्रकार इकाई किसी समस्या या प्रकरण के विभिन्न अन्तर्सम्बन्धित रूपों को जानने के लिए विषय वस्तु का सामान्य प्रारूप है। इकाई के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों के विचार इस प्रकार हैं–

**हैनरी सी. मॉरीसन** के अनुसार–''इकाई वातावरण, संगठित विज्ञान, कला या आचरण की एक व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण अंग होती है, जिसे सीखने से व्यक्ति में सामंजस्य आ जाता है।''

**बॉसिंग** के अनुसार–इकाई से सम्बन्धित तथा अर्थपूर्ण क्रियाओं की व्यापकता श्रेणियाँ निहित हैं, जिसको ऐसे ढंग से विकसित किया जाता है, जिससे ऐसे ढंग से विकसित किया जाता है, जिससे छात्र अभिप्रायों एवं शैक्षिक अनुभवों की प्राप्ति तथा स्वयं में व्यवहार में परिवर्तन ला सकें।

**वेस्ले** के अनुसार–''इकाई सूचना तथा अनुभवों के उस संगठन को कहते हैं, जो सीखने वाले के लिए महतत्वपूर्ण परिणाम उत्पन्न करने में सहायक हो।''

**मॉरीसन योजना के शिक्षण पद** (Teaching Steps of Morrison Plan)–मॉरीसन के अनुसार इकाई योजना के शिक्षण पद इस प्रकार हैं–

1. खोज (Exploration)
2. प्रस्तुतीकरण (Presentation)
3. आत्मीकरण (Assimlation)
4. संगठन (Organization)
5. वाचन (Recitation)
   (i) आदर्श विधि
   (ii) वास्तविक विधि

**इकाई योजना के सोपान** (Steps of the Planing)–रिस्क ने इकाई योजना के निम्नलिखित सोपान बतलाये हैं–

1. सामान्य उद्देश्य का चयन (Section of heneral objectives)
2. इकाई खण्डों का चयन (Selection of unit divisions)
3. इकाई खण्डों का विकास (Developkment of unit divisions)
   (i) खण्ड के विशिष्ट उद्देश्यों का चयन (Selection of specific objectives)
   (ii) प्रत्येक खण्ड के क्षेत्र का निर्धारण (Determination of scope of each Division)
   (iii) उपयुक्त छात्र क्रियाओं का चयन (Selecting Desirable Student Activities)
4. इकाई की प्रस्तावना के लिए तैयारी (Preparation for Introductiry a Unit)
5. व्यक्तिगत विभिन्नताओं के लिए व्याख्या
6. प्रगति का मूल्यांकन
7. सन्दर्भ पुस्तकों तथा शिक्षण सामग्री का चयन

**इकाई योजना के गुण या विशेषताएँ** (Merits of Characteristics of Unit Plan)–

**इकाई योजना के दोष** (Demerits of Unit Plen)–

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

**प्रश्न 25. पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में वार्षिक पाठ योजना के महत्त्व को उदाहरण सहित समझाइये।**

**उत्तर–** **पाठ योजना का अर्थ** (Meaning of lession plan)–पाठ योजना की परिभाषा करते हुए बॉसिंग (Bossing) लिखते हैं–''पाठ संकेत उन उपलब्धियों की सूची का शीर्षक है, जिन्हें अध्यापक कक्षा में प्राप्त करना चाहता है। इनमें वे सभी साधन तथा क्रियायें भी आ जायेंगी, जिनकी सहायता से वे उपलब्धियाँ प्रापत की जाती हैं।'' इस प्रकार पाठ-योजना अध्यापक का लिखित कथन है, जिससे वह नवीन पाठ से सम्बन्धित समस्त बातों को अंकित कर देता है। इसके द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि उसके शिक्षण के सामान्य उद्देश्य क्या हैं? छात्रों का पूर्व ज्ञान क्या है? उसे अपने पाठ को प्रस्तुतीकरण किस प्रकार से करना है तथा छात्रों के ज्ञात का मूल्यांकन किस प्रकार करना है।

**पाठ योजना की परिभाषाएँ** (Definitions of lession plan)–

**डेविस** (Davis) के अनुसार–''कक्षामें जाने से पूर्व शिक्षक को पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए, क्योंकि प्रगति के लिए बात इतनी बाधक नहीं है, जितनी कि शिक्षण की अपूर्ण तैयारी।''

**सी.वी. गुड** (C.V. Good) के अनुसार–''यह एक पाठ के प्रमुख तत्त्वों की रूपरेखा है, जो कि एक क्रम में प्रस्तुत किये जाते हैं। इसमें लक्ष्य, तत्त्वों, पूछने योग्य प्रश्न, सामग्री से सम्बन्धित सन्दर्भ एवं दत्त कार्य सम्मिलित हैं।''

**पाठ योजना की आवश्यकता एवं उद्देश्य** (Need and Aims of lession plan)–

**पाठ योजना का महत्त्व** (Importance of lession plan)–

**पाठ योजना का स्वरूप** (Structure of lession plan)–

पाठ योजना का निर्माण निम्नलिखित स्वरूपों में किया जा सकता है–

(1) हरबर्ट पद्धति, (2) ब्लूम पद्धति, (3) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय तथा मैसूर की पद्धति।

**(1) हरबर्ट की पंचपदी पाठ योजना** (Herbertain five-steps lession plan)–

(i) पाठ की तैयारी अथवा भूमिका (Prepation or interoduction)

(ii) प्रस्तुतीकरण (Presentation)

(iii) तुलना (Comparision)

(iv) प्रयोग (Application)

(v) पुनरावृत्ति (Recapitulation)

**पाठ योजना की रूपरेखा** (Outline of lession plan)–इन पाँच सोपानों के आधार पर पाठ योजना की रूपरेखा विकसित की गई है। इसके प्रमुख पक्ष इस प्रकार हैं–

1. विषय, प्रकरण, कक्षा, विभाग, कालांश तथा दिनांक
2. सामान्य उद्देश्य
3. विशिष्ट उद्देश्य

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

4. प्रस्तावना

5. उद्देश्य कथन

6. प्रस्तुतीकरण विकासात्मक प्रश्न

7. विकासात्मक प्रश्न-1

8. स्पष्टीकरण

9. श्यामपट्ट सार

10. पुनरावृत्ति प्रश्न

11. गृह कार्य

**हरबर्ट पाठ योजना की सीमाएँ** (Limitations of Herbert's lession plan)-

**( 2 ) मूल्यांकन आयाम की पाठ योजना का प्रारूप ( ब्लूम पद्धति )** (Layout of Evaluation Apporach lession plan)-मूल्यांकन आयाम का शिक्षा के एक नये प्रत्यय के रूप में विकास हुआ है। यह शिक्षा को सोद्देश्य प्रक्रिया मानता है। शिक्षा की सभी प्रक्रियायें उद्देश्य केन्द्रित होती हैं। इसमें मूल्यांकन को व्यापक रूप में प्रयुक्त किया जाता है। बी. एस. ब्लूम शिक्षा को त्रिपदी मानते हैं, जिन्हें मूल्यांकन आयाम सोपान कहते हैं। ये तीन सोपान हैं-

**( 1 ) शिक्षण उद्देश्यों का प्रतिपादन** (Formulations of educational objectives)

**( 2 ) अधिगम के अनुभव** (Learing experiences)

| | **शिक्षण उद्देश्य** | **अधिगम के अनुभवों के साधन** |
|---|---|---|
| 1. | ज्ञान उद्देश्य | व्याज़्यान, चार्ट, प्रदर्शन, पाठ्य-पुस्तकें |
| 2. | बोध उद्देश्य | वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर विधि |
| 3. | प्रयोग उद्देश्य | समस्या समाधान, प्रयोगात्मक विधि |
| 4. | सृजनात्मक उद्देश्य | समस्या, समाधान, व्यक्तिगत प्रयोग |

**( 3 ) व्यवहार परिवर्तन का मूलयांकन** (Evaluation of Change of Behaviour)

| | **उद्देश्य** | **मूल्यांकन की प्रविधियाँ** |
|---|---|---|
| 1. | ज्ञानात्मक | मौखिक निरीक्षण तथा लिखित वस्तुनिष्ठ, निबन्धात्मक परीक्षायें तथा साक्षात्कार |
| 2. | भावात्मक | निरीक्षण अभिरुचि सूची, अभिवृत्ति स्केल |
| 3. | क्रियात्मक | निरीक्षण, प्रयोगात्मक, छात्र प्रदर्शन। |

**ब्लूम/मूल्यांकन उपागम के गुण व दोष-**

**( 3 ) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मैसूर ( कर्नाटक ) की पद्धति** (Approach of Regional Education College Mysour (Karnataka) R.C.I.M. **उपागम**)-इस उपागम में ब्लूम के

शैक्षिक लक्ष्यों के वर्गीकरण को ध्यान में रखा गया है। इस उपागम की पाठ योजना स्वरूप में तीन पद सम्मिलित हैं।

(1) अदा, (2) प्रक्रिया, (3) प्रदा।

**( 1 ) अदा**–इसमें चार लक्ष्यों की 17 मानसिक योग्यताएँ निम्नलिखित हैं–

| | **लक्ष्यों का वर्गीकरण** | | **मानसिक योग्यता** |
|---|---|---|---|
| 1. | ज्ञान | (अ) | पुनः स्मरण करना। |
| 2. | बोध | (अ) | सम्बन्ध देखना |
| | | (ब) | उदाहरण देना |
| | | (स) | अन्तर करना |
| | | (द) | वर्गीकरण करना |
| | | (ई) | व्याख्या करना |
| | | (उ) | पुष्टीकरण करना |
| | | (ऊ) | सामान्यीकरण करना |
| 3. | प्रयोग | (अ) | कारण बताना |
| | | (ब) | परिकल्पनाएँ बनाना |
| | | (स) | परिकल्पना स्थापित करना |
| | | (द) | निष्कर्ष निकालना |
| | | (य) | पूर्व कथन करना |
| | | (अ) | विश्लेषण करना |
| | | (ब) | संश्लेषण करना |
| | | (स) | मूल्यांकन करना |

**( 2 ) प्रक्रिया**–

**( 3 ) प्रदा**–

**प्रश्न 26. सामाजिक पर्यावरण अध्ययन में विषय वस्तु विश्लेषण पर निबन्ध लिखिये।**

**उत्तर– विषय वस्तु विश्लेषण का अर्थ** (Meaning of Content Analysis)–उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सबसे अधिक आवश्यक है। इन्हें व्यावहारिक उद्देश्यों में रूपान्तरित करना अर्थात् उद्देश्यों को व्यवहार पर शब्दावली में लिखना विद्यार्थी द्वारा व्यावहारिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके, इस हेतु अधिगम की परिस्थितियों की रचना करनी पड़ती है। अधिगम की परिस्थितियों का उचित निर्माण करने के लिए विद्यार्थी की विशेषताओं की जानकारी आवश्यक है। इस जानकारी के अन्तर्गत विद्यार्थी की योग्यता क्षमता रुचि, आवश्यकता आदि का ज्ञान हो जाता है। इतना कर लेने के बाद

GURUKPO Get Instant Access to your Study Related Queries...

पाठ्य–वस्तु या विषय–वस्तु का विश्लेषण कर उसको सुव्यवस्थित किया जाता है अर्थात् पाठ्य पुस्तक/विषय वस्तु विश्लेषण कहलाता है।

**विषय वस्तु विश्लेषण की परिभाषा** (Definition of Contrent Analysis)–

**1. श्रीमती पी.वी. युंग** के अनुसार– ''पाठ्यवस्तु–विश्लेषण साक्षात्कारों, प्रश्नावलियों, अनुसूचित तथा अन्य लिखित या मौखिक भाषातग अभिव्यक्तियों द्वारा प्राप्त शोध तथ्यों के पाठ्यवस्तु का क्रमबद्ध वस्तुनिष्ठ तथा परिमाणात्मक वर्णन के लिए अपनाई जाने वाली एक शौध प्रविधि है।''

**2. डेवीस** के अनुसार– ''शिक्षण की पाठ्यवस्तु का उसके अवयवों तथा तत्वों में विश्लेषण तर्क पूर्ण ढंग से किया जाता है और उसका संश्लेषण क्रमबद्ध रूप से तार्किक ढंग से किया जाता है।''

**विषय वस्तु का महत्त्व** (Importance of Content) –

**विषय वस्तु अभिलेखन के सिद्धान्त**–

रुचि का सिद्धान्त (Principle of Interest)

क्रियाशीलता का सिद्धान्त (Principle of Activity)

उपयोगिता का सिद्धान्त (Principle of Individual)

समन्वय का सिद्धान्त (Principle of Correlation)

विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धान्त (Principle of Vividness & Flexibility)

अवकाश के सदुपयोग का सिद्धान्त (Principle of Proper use of lesiure)

जीवन से सज़्बन्धित होने का सिद्धान्त (Principle of linking with life)

सामुदायिक जीवन से सज़्बन्धित होने का सिद्धान्त (Principle of Relationship with community life)

**प्रश्न 27. विद्यार्थियों में सद् व्यवहार का बढ़ावादेने हेतु शिक्षक द्वारा शिक्षण के दौरान क्या–क्या उपाय अपनाने चाहिये।**

**उत्तर– सामाजिक विज्ञान** (Social Sciences)– सामाजिक विज्ञान अंग्रेजी के (Social Sciences का हिन्दी रूपान्तर है। Social Science शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। Social एवं Science सोशल Social शब्द का अर्थ सामाजिक और Sciences का अर्थ है विज्ञान इस प्रकार सामाजिक विज्ञान से अभिप्राय मानव क्रियाओं और व्यवहारों का उनके सामाजिक समूहों में क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन है।

समाजशास्त्र शब्दकोश में सामाजिक विज्ञान के अर्थ को इस प्रकार कियागया है। ''सामाजिक विज्ञान शब्द का प्रयोग सामान्यतया ऐसी किसी अध्ययन के लिए स्वीकार किया जा सकता है। जो मानव और समाज से सज़्बन्धित हो सकता है। लेकिन विशिष्ट रूप से यह विषय मानव सज़्बन्धों के क्लिष्ट एवं जटिल संबंधों के अध्ययन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली वैज्ञानिक विधियों के लिए काम में

लाया जाता है, जो व्यक्तियों को समाज में मिलकर रहने एवं उनके परस्पर मानवीय सम्बन्धों के विकास से सहयोग प्रदान करता है।''

**समाज विज्ञान के विश्वकोश** के अनुसार- ''सामाजिक विज्ञानों को उनके मानसिक या सांस्कृतिक विज्ञानों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो व्यक्ति की क्रियाओं का उसको समूह का सदस्य मानकर अध्ययन करते हैं।''

**शिक्षा शब्दकोश** में- ''सामाजिक विज्ञान मानव समाज के विशेष क्षेत्रों जैसे अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र से व्यवहाररखने वाला विज्ञान का एक समूह है।''

**छात्रों में सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन से सामाजिक आदतों, सद्व्यवहारों व सद्-भावनाओं का विकास :**

**अर्थ एवं अवधारणा** (Meaning and Concept)-

अपनी सामाजिक प्रवृत्ति के कारण मनुष्य को सदैव समाज में रहनाआवश्यक हो चाहे उसका समाज कितना भी छोटा या बड़ा हो अथवा उसकी व्यवस्था किसी प्रकार की हो। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन छात्रों को सहकारिता, सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता पारस्परिक स्नेह, अनेक आवश्यक एवं वांछित सामाजिक अभिवृत्तियों व गुणों का विकास करता है।

सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण द्वारा अभिवृत्तियों व अभिरुचियों का विकास :

निदेशालय माध्यमिक शिक्षा प्रसार कार्यक्रम,राजस्थान द्वारा

सामाजिक पर्यावरण अध्ययन की विषय वस्तु के द्वारा सामाजिक आदतों सद्व्यवहार एवं सदभावना का विकास कैसे करें।

**प्रश्न 28. पर्यावरण अध्ययन में प्रदूषण से आप क्या समझते हैं? प्रदूषण के विविध प्रकारों का विस्तार से वर्णन कीजिये।**

**उत्तर- पर्यावरण का अर्थ** (Meaning of Environment)-

पर्यावरण का अभिप्राय उस समष्टि से है जो मनुष्य एवं उसकी क्रियाओं को घेरे हुए हैं। अंग्रेजी के Environment शब्द के विन्यास से यह स्पष्ट है कि इसमें 'Environ' का अर्थ 'घेरना' है और Ment का अर्थ चतुर्दिश अर्थात् चारों और सेहै। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ है। चारों ओर से घेरना। वस्तुत: Environment शब्द Envelope शब्द का पर्याय है। दूसरे शब्दों में मनुष्य को सभी दिशाओं से आवृत करने वाले तत्वों के सामूहिक रूप को पर्यावरण कहा जाता है।

**पर्यावरण की परिभाषाएँ** (Definitions of Environment)-

**1. वुडसवर्थ** (Woodsworth) के अनुसार- ''पर्यावरण का अभिप्राय उन सभी बाह्य शक्तियों एवं तत्वों से है जो व्यक्तियों को आजीवन प्रभावित करते हैं।''

**2. जिज़्बर्ट** (Gimbert) के अनुसार- ''पर्यावरण में वह सब कुछ है जो किसी व्यक्ति को चारों और से घेरे हुए हैं एवं उन पर सीधा प्रभाव पड़ता है।''

**3. रॉस** (Ross) के अनुसार- ''कोई भी बाह्य शक्ति, जो हमें प्रभावित करती है, पर्यावरण होती है।''

इस प्रकार इस मिले-जुले रूप को पर्यावरण कहा जाता है अर्थात् जो कुछ भी चारों और विद्यमान है। वे चाहे भौतिक, जैविक, सामाजिक प्रक्रियाएँ, पदार्थ, संरचनाएँ, विचारधाराएँ आदि जो कुछ भी है। उन सभी का सज़्मिलित रूप पर्यावरण कहलाता है।

**पर्यावरण के प्रकार** (Types of Environment)-

पर्यावरण के दो प्रकार होते हैं-

(1) प्राकृतिक पर्यावरण

(2) सामाजिक पर्यावरण

**प्रदूषण** (Pollution)-

प्रदूषण से अभिप्राय- प्राकृतिक जल, वायु, जमीन का क्रमिक रूप से दृषित होना। इससे पर्यावरण में हानिकारक, अवांछित अपशिष्ट पदार्थ उत्पन्न हो जाता है। अत: प्रदूषण एक ऐसी अवांछनीय स्थिति है।

पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले प्रमुख प्रदूषक निज़्नलिखित हैं-

1. कार्बन डाइ ऑक्साइड
2. कार्बन मोनो ऑक्साइड
3. सल्फर ऑक्साइड
4. फास्फेट, पारा, सीसा, लोहा, जिंक, आदि के कण
5. हाइड्रोजन ऑक्साइड
6. क्लोराइड, ब्रोमाइड एवं आयोडीन
7. कार्बनिक प्रदूषक-बेन्जाइन, ऐसेटिक ऐसिड, बेंजपी आदि।
8. ज़्लोरीन एवं ज़्लोराइड्स
9. प्रकाश जनित रसायन
10. सल्ज़्यूरिक एसिड

**प्रदूषण के प्रकार** (Types of Pollution)-

1. वायु प्रदूषण (Air Pollution)
2. जल प्रदूषण (Water Pollution)
3. ध्वनि प्रदूषण (Sound Pollution)
4. मृद्रा प्रदूषण (Soil Pollution)

5. रेडियोधर्मी प्रदूषण (Radioactive Pollution)

6. तापीय प्रदूषण (Thermal Pollution)

**प्रदूषण के कारण** (Cause of Pollution)–

**प्रदूषण रोकथाम के उपाय** (Preventive Suggestion to Pollution)–

**प्रश्न 29. मूल्यांकन किसे कहते हैं? शिक्षण में मूल्यांकन का क्या महत्त्व है। अच्छे मूल्यांकन की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं।**

**उत्तर– मूल्यांकन की परिभाषा** (Definition of Evaluation)–

मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका प्रमुख कार्य शिक्षा को उद्देश्य केन्द्रित बनाना है। **ग्रीन व अन्य** का कहना है। ''शिक्षा में मूल्यांकन अभी नवीनधारणा है। इसका प्रयोग विद्यालय कार्यक्रम, पाठ्यक्रम शैक्षिक सामग्री, शिक्षक एवं बालकों की जाँच के लिए किया जाता है।'' इसके द्वारा शिक्षण के उद्देश्यों, सीखने, अधिगम अनुभवों तथा परीक्षणों में घनिष्ठ सज़्बन्ध स्थापित किया जाता है।

**शिक्षा आयोग- ( 1964-66 )** ने अपने प्रतिवेदन में मूल्यांकन की अवधारणा को इन शब्दों में परिभाषित किया है। ''मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जो शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। इससे छात्र की अध्ययन आदतों तथा शिक्षक की शिक्षण पद्धति पर प्रभाव पड़ता है। मूल्यांकन की प्रविधियाँ वांछित दिशाओं में विद्यार्थी के विकास के सज़्बन्ध में प्रमाण संग्रहित करने के साधन है।''

**डॉ. जी.पी. शेरी** (Dr. G.P. Sherry) के अनुसार ''शिक्षा कार्यक्रम ने शिक्षा के उद्देश्यों की कितनी पूर्त्ति की है, यह पता लगाना ही मूल्यांकन है।''

**मोफाट** (Moffat) -''मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और यह छात्रों की औपचारिक शैक्षिक उपलब्धि की समीक्षा करता है। यह व्यक्ति के विकास में अधिक रुचि रखता है। व्यक्ति के विकास को उसकी भावनाओं, विचारों तथा क्रियाओं से जोड़कर वांछित व्यवहार परिवर्तनों के रूप में अभिव्यक्त करता है।''

**क्विलिन व हन्ना** (Quillen & Hanna) -''छात्रों के व्यवहार में विद्यालय द्वारा लाये गये परिवर्तनों के विषय में प्रमाणों के संकलन और उनकी व्याज़्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।''

**मूल्यांकन का महत्त्व** (Importance of Evaluation)–

1. अध्यापक के दृष्टिकोण से

2. छात्रों के दृष्टिकोण से

3. समाज के दृष्टिकोण से

**मूल्यांकन की विशेषताएँ** (Characteristics of Evaluation)–

मूल्यांकन की निज़्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ हैं–

1. इसके द्वारा सीखे हुए अनुभवों तथा व्यवहारों सम्बन्धी परिवर्तनों के साधनों का संकलन किया जाता है।
2. यह निर्णयात्मक प्रक्रिया है।
3. इसमें अव्यावहारिक परिवर्तनों तथा अनुभवों की उपादेयता का निर्णय किया जाता है।
4. यह एक निरन्तर तथा सामाजिक प्रक्रिया है।
5. फलतः मूल्यांकन शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों की दृष्टि में उपयोगी है।
6. मूल्यांकन विभेदकारी होता है अर्थात् औसत, पिछड़े तथा मेधावी छात्रों में विभेद कर सकता है।
7. इसमें विश्वसनीयता एवं वैधता होती है।
8. यह व्यापक होता है, अर्थात् समस्त प्रकरणों पर सम्बन्धित प्रश्न होते हैं।

**प्रश्न 30. सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण में परीक्षा की विभिन्न विधियाँ क्या है? एक अच्छे प्रश्न पत्र बनाते समय आप किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?**

**उत्तर– परीक्षा का अर्थ** (Meaning of Examination)-

आधुनिक शिक्षा पूर्णतया परीक्षा प्रणाली से आच्छादित है। देश के विद्यालयों ने परीक्षा को ही अपना ध्येय बना लिया है।

अंग्रेजी में परीक्षा शब्द के लिए ''एग्जामिनेशन'' (Examination) शब्द का प्रयोग होता है। Examination शब्द का अर्थ तराजू के कांटे से है अर्थात् विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र की शैक्षिक योग्यता को 'परीक्षा द्वारा तोलना या मापन है।' अन्य शब्दों में, परीक्षा द्वारा अध्यापक अथवा अधिकारी वर्ग छात्रों के कार्य की व्यवस्थित रूप से जाँच करते हैं और यह देखते हैं कि उन्होंने विषयों में कितनी प्रगति की है।

**मूल्यांकन की नवीन विधियाँ** (New Techniques of Evaluation)-

मूल्यांकन की नवीन पद्धतियाँ, विधियों का अध्यन हम निम्नांकित शीर्षकों में प्रस्तुत कर रहे हैं-1. व्यक्तिगत परीक्षाएँ
2. सामूहिक परीक्षाएँ
3. बुद्धि परीक्षाएँ
4. सामर्थ्य परीक्षाएँ
5. व्यक्तित्व की परीक्षा
6. सामाजिकता की माप
7. प्रक्षेपण विधि
8. मनोविश्लेषण विधियाँ

For more detail: - http://www.gurukpo.com

**प्रश्न-पत्र निर्माण** (Paper Setting)-

प्रश्न पत्र निर्माण शैली में कुछ परिवर्तन करना पड़ता है जो कि निम्नलिखित प्रकार से दर्शाया गया है-

1. नमूने की तैयारी (Preparation of Design)
2. ब्ल्यू-प्रिंट की तैयारी (Preparation of Blue Print)
3. प्रश्न बनाना (Designing Questions)
4. प्रश्न-पत्र का सम्पादन करना (Editing the Question Paper)
5. अंक प्रणाली (Marking Scheme)
6. प्रश्नों के क्रम से प्रश्न-पत्र का विश्लेषण।

Send your requisition at
info@biyanicolleges.org